मई 2023

आज़ादी का अमृत महोत्सव

युवा संगम

एक भारत श्रेष्ठ भारत

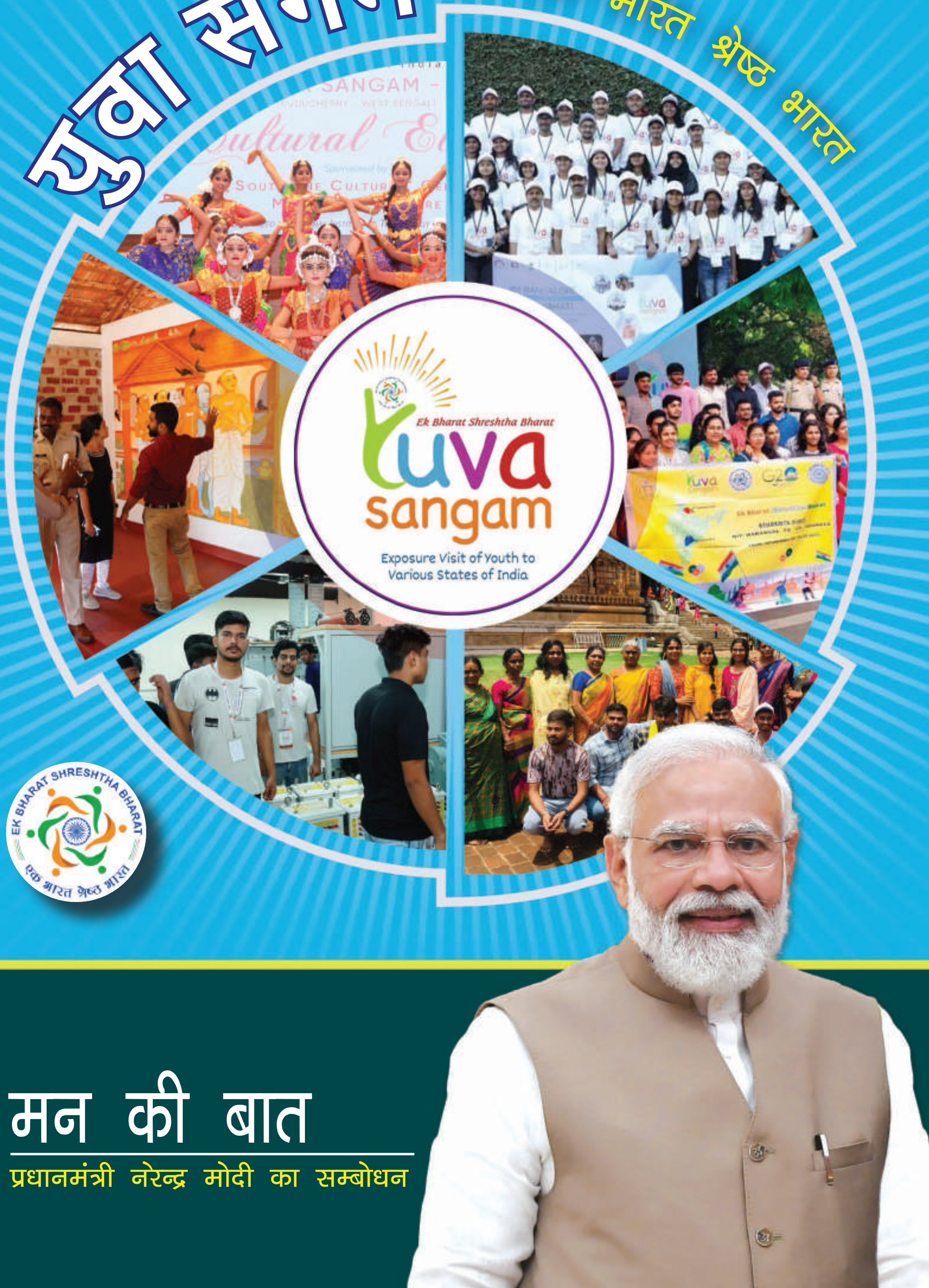

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 1

02 प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख 14

2.1 युवा संगम
'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना का संवर्धन 16

2.1.1 युवा संगम - जीवन का अभूतपूर्व अनुभव
धर्मेंद्र प्रधान का लेख 24

2.1.2 सांस्कृतिक समन्वय में युवाओं की भागीदारी
प्रो. परमेश्वर के. अय्यर का साक्षात्कार 26

2.2 भारतीय संग्रहालय
अतीत, वर्तमान और भविष्य की बोधगम्यता के प्रतीक 28

2.2.1 राष्ट्रीय संग्रहालय : विरासत और शिक्षा का केंद्र
डॉ. बी.आर. मणि का लेख 40

2.3 जल संरक्षण
भारत के युवाओं के हाथ में समाधान का नेतृत्व 42

2.3.1 प्रधानमंत्री मोदी का विज़न : प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत का समर्पण
अनिल प्रकाश जोशी का लेख 46

2.4 जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान 52

2.5 विनायक दामोदर सावरकर : एक 'वीर' 54

03 प्रतिक्रियाएँ 57

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो! नमस्कार

'मन की बात' में एक बार फिर आप सभी का बहुत-बहुत स्वागत है। इस बार 'मन की बात' का ये एपिसोड 2nd सेंचुरी का प्रारम्भ है। पिछले महीने हम सभी ने इसकी स्पेशल सेंचुरी को सेलिब्रेट किया है। आपकी भागीदारी ही इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी ताकत है। 100वें एपिसोड के ब्रॉडकास्ट के समय, एक प्रकार से पूरा देश एक सूत्र में बँध गया था। हमारे सफाईकर्मी भाई-बहन हों या फिर अलग-अलग सेक्टर्स के दिग्गज, 'मन की बात' ने सबको एक साथ लाने का काम किया है। आप सभी ने जो आत्मीयता और स्नेह 'मन की बात' के लिए दिखाया है, वो अभूतपूर्व है, भावुक कर देने वाला है। जब 'मन की बात' का प्रसारण हुआ, तो उस समय दुनिया के अलग-अलग देशों में, अलग-अलग टाइम ज़ोन में, कहीं शाम हो रही थी तो कहीं देर रात थी, इसके बावजूद, बड़ी संख्या में लोगों ने 100वें एपिसोड को सुनने के लिए समय निकाला। मैंने हज़ारों मील दूर न्यूज़ीलैंड का वो वीडियो भी देखा, जिसमें 100 वर्ष की एक माताजी अपना आशीर्वाद दे रही हैं। 'मन की बात' को लेकर देश-विदेश के लोगों ने अपने विचार रखे हैं। बहुत सारे लोगों ने कंस्ट्रक्टिव एनालिसिस भी किया है। लोगों ने इस बात को अप्रेशिएट किया है कि 'मन की बात' में देश और देशवासियों की उपलब्धियों की ही चर्चा होती है। मैं एक बार फिर आप सभी को इस आशीर्वाद के लिए पूरे आदर के साथ धन्यवाद देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, बीते दिनों हमने 'मन की बात' में काशी-तमिल संगमम् की बात की, सौराष्ट्र-तमिल

संगमम् की बात की। कुछ समय पहले ही वाराणसी में, काशी-तेलुगु संगमम् भी हुआ। **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को ताकत देने वाला ऐसा ही एक और अनूठा प्रयास देश में हुआ है। ये प्रयास है, युवा संगम का। मैंने सोचा, इस बारे में विस्तार से क्यों न उन्हीं लोगों से पूछा जाए, जो इस अनूठे प्रयास का हिस्सा रहे हैं। इसलिए अभी मेरे साथ फ़ोन पर दो युवा जुड़े हुए हैं– एक हैं अरुणाचल प्रदेश के ग्यामर न्योकुम जी और दूसरी बेटी है बिहार की बिटिया विशाखा सिंह जी।** आइए पहले हम ग्यामर न्योकुम से बात करते हैं।

प्रधानमंत्री जी : ग्यामर जी, नमस्ते!

ग्यामर जी : नमस्ते मोदी जी !

प्रधानमंत्री जी : अच्छा ग्यामर जी ज़रा सबसे पहले तो मैं आपके विषय में जानना चाहता हूँ।

ग्यामर जी : मोदी जी सबसे पहले तो मैं आपका और भारत सरकार का बहुत ही ज़्यादा आभार व्यक्त करता हूँ, कि आपने बहुत कीमती टाइम निकाल के मुझ से बात करने का मुझे मौका दिया। मैं नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, अरुणाचल प्रदेश में फर्स्ट इयर में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में पढ़ रहा हूँ।

प्रधानमंत्री जी : और परिवार में क्या करते हैं पिताजी वगैरह।

ग्यामर जी : जी मेरे पिताजी छोटे-मोटे बिज़नेस और उसके बाद कुछ फार्मिंग में, सब करते हैं।

प्रधानमंत्री जी : युवा संगम के लिए आपको पता कैसे चला, युवा संगम में गए कहाँ, कैसे गए, क्या हुआ ?

ग्यामर जी : मोदी जी मुझे युवा संगम का हमारे जो इंस्टीट्यूशन हैं, जो NIT हैं, उन्होंने हमें बताया था कि आप इसमें भाग ले सकते हैं, तो मैंने फिर थोड़ा इन्टरनेट में खोज किया, फिर मुझे पता चला कि ये बहुत ही अच्छा प्रोग्राम है, जिसने मुझे 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का जो विज़न है, उसमें भी बहुत ही योगदान दे सकते हैं और मुझे कुछ नया चीज़ जानने का मौका मिलेगा ना, तो तुरंत मैंने फिर उसमें वेबसाइट में जाके एनरोल किया। मेरा अनुभव बहुत ही मज़ेदार रहा, बहुत ही अच्छा था।

प्रधानमंत्री जी : कोई सलेक्शन आपको करना था?

ग्यामर जी : मोदी जी जब वेबसाइट खोला था तो अरुणाचल वालों के लिए दो आप्शन था। पहला था आंध्र प्रदेश, जिसमें IIT तिरुपति था और दूसरा था सेंट्रल यूनिवर्सिटी, राजस्थान। तो मैंने राजस्थान में किया था अपना फर्स्ट प्रेफेरेन्स, सेकंड प्रेफेरेन्सस मैंने IIT तिरुपति किया था, तो मुझे राजस्थान के लिए सेलेक्ट हुआ था, तो मैं राजस्थान गया था।

प्रधानमंत्री जी : कैसा रहा आपका राजस्थान यात्रा, आप पहली बार राजस्थान गए थे!

ग्यामर जी : हाँ, मैं पहली बार अरुणाचल से बाहर गया था। मैंने तो जो राजस्थान के किले, ये सब तो मैंने बस फिल्म और फ़ोन में ही देखा था न, तो, मैंने जब पहली बार देखा तो मेरा एक्सपीरियंस बहुत ही, वहाँ के लोग बहुत ही अच्छे थे और जो हमें ट्रीटमेंट दिया, बहुत ही ज़्यादा अच्छे थे। क्या हमें नया-नया चीज़ सीखने को मिला। मुझे राजस्थान के बड़े झील और उधर के लोग जैसे कि रेन वाटर हार्वेस्टिंग बहुत कुछ नया-नया चीज़ सीखने को मिला, जो मुझे बिलकुल ही मालूम नहीं था, तो ये प्रोग्राम बहुत ही अच्छा था, राजस्थान का विजिट।

प्रधानमंत्री जी : देखिए आपको तो सबसे बड़ा फायदा ये हुआ है कि अरुणाचल में भी वीरों की भूमि है, राजस्थान भी वीरों की भूमि है और राजस्थान से सेना में भी बहुत बड़ी संख्या में लोग हैं और अरुणाचल में सीमा पर जो सैनिक हैं, उसमें जब भी राजस्थान के लोग मिलेंगे तो आप ज़रूर उनसे बात करेंगे, कि देखिए, मैं राजस्थान गया था, ऐसा अनुभव था तो आपकी तो निकटता, एकदम से बढ़ जाएगी। अच्छा आपको वहाँ कोई समानताएँ भी ध्यान में आई होंगी, आपको लगता होगा, हाँ यार, ये अरुणाचल में भी तो ऐसा ही है।

ग्यामर जी : मोदी जी मुझे जो एक समानता मुझे मिली न, वो थी कि जो देश प्रेम है ना और जो, एक भारत, श्रेष्ठ भारत का जो विज़न और जो फीलिंग जो मुझे दिखा, क्योंकि अरुणाचल में भी लोग अपने आप को बहुत ही गर्व महसूस करते हैं कि वो भारतीय हैं, इसलिए और राजस्थान में भी लोग अपनी मातृभूमि के लिए बहुत जो गर्व महसूस होता है, वो चीज़ मुझे बहुत ही ज़्यादा नज़र आया और स्पेशली जो युवा पीढ़ी है न, क्योंकि मैंने उधर में बहुत सारे युवा के साथ

इंटरेक्ट और बातचीत किया ना तो वो चीज़, जो मुझे बहुत सिमिलरिटी नज़र आया, जो वो चाहते हैं कि भारत के लिए जो कुछ करने का और जो अपने देश के लिए प्रेम है ना, वो चीज़ मुझे बहुत ही दोनों ही राज्यों में बहुत ही सिमिलरिटी नज़र आया।

प्रधानमंत्री जी : तो वहाँ जो मित्र मिले हैं, उनसे परिचय बढ़ाया कि आकर के भूल गए?

ग्यामर जी : नहीं, हमने बढ़ाया, परिचय किया।

प्रधानमंत्री जी : हाँ...! तो आप सोशल मीडिया में एक्टिव हैं ?

ग्यामर जी : जी मोदी जी, मैं एक्टिव हूँ।

प्रधानमंत्री जी : तो आपने ब्लॉग लिखना चाहिए, अपना ये युवा संगम का अनुभव कैसा रहा, आपने उसमें एनरोल कैसे किया, राजस्थान में अनुभव कैसा रहा ताकि देशभर के युवाओं को पता चले कि 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का माहात्म्य क्या है, ये योजना क्या है ? उसका फायदा युवक कैसे ले सकते हैं, पूरा अपने एक्सपीरियंस का ब्लॉग लिखना चाहिए, तो बहुत लोगों को पढ़ने के लिए काम आएगा।

ग्यामर जी : जी मैं ज़रूर करूँगा।

प्रधानमंत्री जी : ग्यामर जी, बहुत अच्छा लगा आपसे बात करके और आप सब युवा देश के लिए, देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए, क्योंकि ये 25 साल अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं, आपके जीवन के भी और देश के जीवन के भी, तो मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं, धन्यवाद।

ग्यामर जी : धन्यवाद मोदी जी आपको भी।

प्रधानमंत्री जी : नमस्कार, भइया।

साथियो, अरुणाचल के लोग इतनी आत्मीयता से भरे होते हैं कि उनसे बात करते हुए मुझे बहुत आनंद आता है। युवा संगम में ग्यामर जी का अनुभव तो बेहतरीन रहा। आइए, अब बिहार की बेटी विशाखा सिंह जी से बात करते हैं।

प्रधानमंत्री जी : विशाखा जी, नमस्कार।

विशाखा जी : सर्वप्रथम तो भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी को मेरा प्रणाम और मेरे साथ सभी डेलिगेट्स की तरफ़ से आप को बहुत-बहुत प्रणाम।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा विशाखा जी पहले अपने बारे में बताइए। फिर मुझे युवा संगम के विषय में भी जानना है।

विशाखा जी : मैं बिहार के सासाराम नाम के शहर की निवासी हूँ और मुझे युवा संगम के बारे में मेरे कॉलेज के वाट्सएप ग्रुप के मैसेज के थ्रू पता चला था सबसे पहले, तो उसके बाद फिर मैंने पता करा इसके बारे में और डिटेल निकाली कि ये क्या है ? तो मुझे पता चला कि ये प्रधानमंत्री जी की एक स्कीम 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के थ्रू युवा संगम है, तो उसके बाद मैंने अप्लाई करा और जब मैंने अप्लाई करा तो मैं एक्साइटेड थी, इससे ज्वाइन होने के लिए, लेकिन जब वहाँ से घूम के तमिलनाडु जा के वापस आई, वो जो एक्सपोज़र मैंने गेन किया, उसके बाद मुझे अभी बहुत ज़्यादा ऐसा प्राउड फील होता है that I have been the part of this programme, तो मुझे बहुत ही ज़्यादा ख़ुशी है उस प्रोग्राम में पार्ट लेने की और मैं तहेदिल से आभार व्यक्त करती हूँ आपका कि आपने हमारे जैसे युवाओं के लिए इतना बेहतरीन प्रोग्राम बनाया, जिससे हम भारत के विभिन्न भागों के कल्चर को एडॉप्ट कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री जी : विशाखा जी, आप क्या पढ़ती हैं ?

विशाखा जी : मैं कम्प्यूटर साइंस इंजीनियरिंग की सेकंड इयर की छात्रा हूँ।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा विशाखा जी, आपने किस राज्य में जाना है, कहाँ जुड़ना है, वो निर्णय कैसे किया ?

विशाखा जी : जब मैंने ये युवा संगम के बारे में सर्च करना शुरू किया गूगल पर, तभी मुझे पता चल गया था कि बिहार के डेलिगेट्स को तमिलनाडु के डेलिगेट्स के साथ एक्सचेंज किया जा रहा है। तमिलनाडु काफी रिच कल्चरल स्टेट है हमारे कंट्री का, तो उस टाइम भी जब मैंने ये जाना, ये देखा कि बिहार वालों को तमिलनाडु भेजा जा रहा है तो इसने भी मुझे बहुत ज़्यादा मदद किया ये डिसिज़न लेने में कि मुझे फार्म फिल करना चाहिए, वहाँ जाना चाहिए या नहीं और मैं सच में आज बहुत ज़्यादा गौरवान्वित महसूस करती हूँ कि मैंने इसमें पार्ट लिया और मुझे बहुत खुशी है।

प्रधानमंत्री जी : आपका पहली बार जाना हुआ तमिलनाडु?

विशाखा जी : जी, मैं पहली बार गई थी।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा, कोई ख़ास यादगार चीज़ अगर आप कहना चाहें तो क्या कहेंगे? देश के युवा सुन रहे हैं आपको।

विशाखा जी : जी, पूरा जर्नी ही मानें तो मेरे लिए बहुत ही ज़्यादा बेहतरीन रहा है। एक-एक पड़ाव पर हमने बहुत ही अच्छी चीज़ें सीखी हैं। मैंने तमिलनाडु में जाके अच्छे दोस्त बनाए हैं। वहाँ के कल्चर को एडाप्ट किया है। वहाँ के लोगों से मिली मैं, लेकिन सबसे ज़्यादा अच्छी चीज़ जो मुझे लगी, वहाँ पे वो पहली चीज़ तो ये कि किसी को भी मौका नहीं मिलता है ISRO में जाने का और हम डेलिगेट्स थे तो हमें ये मौका मिला था कि हम ISRO में जाएँ, प्लस दूसरी बात सबसे अच्छी थी वो, जब हम राजभवन में गए और हम तमिलनाडु के राज्यपाल जी से मिले, तो वो दो मोमेंट जो था, वो मेरे लिए, काफी सही था और मुझे ऐसा लगता है कि जिस ऐज में हम हैं, एज ए यूथ, हमें वो मौका नहीं मिल पाता, जो कि युवा संगम के थ्रू मिला है, तो ये काफ़ी सही और सबसे यादगार मोमेंट था मेरे लिए।

प्रधानमंत्री जी : बिहार में तो खाने का तरीका अलग है, तमिलनाडु में खाने का तरीका अलग है।

विशाखा जी : जी।

प्रधानमंत्री जी : तो वो सेट हो गया था पूरी तरह ?

विशाखा जी : वहाँ जब हम लोग गए थे, तो साउथ इंडियन कुज़िन है वहाँ पे, तमिलनाडु में, तो जैसे ही हम लोग गए थे तो वहाँ जाते के साथ हमें डोसा, इडली, साम्भर, उत्तपम, वड़ा, उपमा, ये सब सर्व किया गया था, तो पहले जब हमने ट्राई करा तो that was too good! वहाँ का खाना जो है, वो बहुत ही हेल्दी है, एक्चुली बहुत ही ज़्यादा टेस्ट में भी बेहतरीन है और हमारे नार्थ के खाने से बहुत ही ज़्यादा अलग है तो मुझे वहाँ का खाना भी बहुत अच्छा लगा और वहाँ के लोग भी बहुत अच्छे लगे।

प्रधानमंत्री जी : तो अब तो दोस्त भी बन गए होंगे तमिलनाडु में ?

विशाखा जी : जी! जी, वहाँ पर हम रुके थे NIT त्रिची में, उसके बाद IIT मद्रास में, तो उन दोनों जगह के स्टूडेंट्स से तो मेरी दोस्ती हो गई है, प्लस बीच में एक CII का वेलकम सेरेमनी था तो वहाँ पे वहाँ के आस-पास के कॉलेज के भी बहुत सारे स्टूडेंट्स आए थे, वहाँ हमने उन स्टूडेंट्स से भी इंटरेक्ट किया और मुझे बहुत अच्छा लगा उन लोगों से मिल के, काफ़ी लोग तो मेरे दोस्त भी हैं और कुछ डेलिगेट से भी मिले थे, जो तमिलनाडु के डेलिगेट बिहार आ रहे थे तो हमारी बातचीत उनसे भी हुई थी और हम अभी भी आपस में बात करते हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।

प्रधानमंत्री जी : तो विशाखा जी, आप एक ब्लॉग लिखिए और सोशल मीडिया पर ये आपको पूरा अनुभव एक तो इस युवा संगम का फिर 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का और फिर तमिलनाडु में अपनापन जो मिला, जो आपका स्वागत-सत्कार हुआ। तमिल लोगों का प्यार मिला, ये सारी चीज़ें देश को बताइए आप; तो लिखोगी आप ?

विशाखा जी : जी ज़रूर !

प्रधानमंत्री जी : तो मेरी तरफ़ से आपको बहुत शुभकामना है और बहुत-बहुत धन्यवाद।

विशाखा जी : जी thank you so much। नमस्कार।

ग्यामर और विशाखा आपको मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। युवा संगम में आपने जो सीखा है, वो जीवनपर्यंत आपके साथ रहे, यही मेरी आप सबके प्रति शुभकामना है।

साथियो, भारत की शक्ति इसकी विविधता में है। हमारे देश में देखने के लिए बहुत कुछ है। इसी को देखते हुए एजुकेशन मिनिस्ट्री ने 'युवा संगम' नाम से एक बेहतरीन पहल की है। इस पहल का उद्देश्य 'पीपुल टू पीपुल कनेक्ट' बढ़ाने के साथ ही देश के युवाओं को आपस में घुलने-मिलने का मौका देना। विभिन्न राज्यों के उच्च शिक्षा संस्थानों को इससे जोड़ा गया है। 'युवा संगम' में युवा दूसरे राज्यों के शहरों और गाँवों में जाते हैं, उन्हें अलग-अलग तरह के लोगों के साथ मिलने का मौका मिलता है। युवा संगम के फर्स्ट राउंड में लगभग 1200 युवा, देश के 22 राज्यों का दौरा कर चुके हैं। जो भी युवा इसका हिस्सा बने हैं, वे अपने साथ ऐसी यादें लेकर वापस लौट रहे हैं, जो जीवनभर उनके हृदय में बसी रहेंगी। हमने देखा है कि कई बड़ी कम्पनियों के CEO, बिज़नेस लीडर्स, उन्होंने बैग-पैकर्स की तरह भारत में समय गुज़ारा है। मैं जब दूसरे देशों के लीडर्स से मिलता हूँ, तो कई बार वो भी बताते हैं कि वो अपनी युवावस्था में भारत घूमने के लिए गए थे। हमारे भारत में इतना कुछ जानने और देखने के लिए है कि आपकी उत्सुकता हर बार बढ़ती ही जाएगी। मुझे उम्मीद है कि इन रोमांचक अनुभवों को जानकर आप भी देश के अलग-अलग हिस्सों की यात्रा के लिए ज़रूर प्रेरित होंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ दिन पहले ही मैं जापान में हिरोशिमा में था। वहाँ मुझे हिरोशिमा पीस मेमोरियल म्यूज़ियम में जाने का अवसर मिला। ये एक भावुक कर देने वाला अनुभव था। जब हम इतिहास की यादों को संजोकर रखते हैं तो वो आने वाली पीढ़ियों की बहुत मदद करता है। कई बार म्यूज़ियम में हमें नए सबक मिलते

हैं तो कई बार हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। कुछ दिन पहले ही भारत में इंटरनेशनल म्यूज़ियम एक्सपो का भी आयोजन किया था। इसमें दुनिया के 1200 से अधिक म्यूज़ियम्स की विशेषताओं को दर्शाया गया। हमारे यहाँ भारत में अलग-अलग प्रकार के ऐसे कई म्यूज़ियम्स हैं, जो हमारे अतीत से जुड़े अनेक पहलुओं को प्रदर्शित करते हैं, जैसे गुरुग्राम में एक अनोखा संग्रहालय है– मिज़ियो कैमरा, इसमें 1860 के बाद के 8 हज़ार से ज़्यादा कैमरों का कलेक्शन मौजूद है। तमिलनाडु के म्यूज़ियम ऑफ़ पोसिबिलिटी को हमारे दिव्यांगजनों को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया गया है। मुम्बई का छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय एक ऐसा म्यूज़ियम है, जिसमें 70 हज़ार से भी अधिक चीज़ें संरक्षित की गई हैं। साल 2010 में स्थापित इंडियन मेमोरी प्रोजेक्ट एक तरह का ऑनलाइन म्यूज़ियम है। ये जो दुनियाभर से भेजी गई तस्वीरों और कहानियों के माध्यम से भारत के गौरवशाली इतिहास की कड़ियों को जोड़ने में जुटा है। विभाजन की विभीषिका से जुड़ी स्मृतियों को भी सामने लाने का प्रयास किया गया है। बीते वर्षों में भी हमने भारत में नए-नए तरह के म्यूज़ियम और मेमोरियल बनते देखे हैं। स्वाधीनता संग्राम में आदिवासी भाई-बहनों के योगदान को समर्पित 10 नए म्यूज़ियम बनाए जा रहे हैं। कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल में बिप्लोबी भारत गैलरी हो या फिर जलियाँवाला बाग मेमोरियल का पुनुरुद्धार, देश के सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों को समर्पित पीएम म्यूज़ियम भी आज दिल्ली की शोभा बढ़ा रहा है। दिल्ली में ही नेशनल वार मेमोरियल और पुलिस मेमोरियल में हर रोज़ अनेकों लोग शहीदों को नमन करने आते हैं।

संग्रहालय
अतीत के झरोखे, भविष्य के द्वार

ऐतिहासिक दांडी यात्रा को समर्पित दांडी मेमोरियल हो या फिर स्टेचू ऑफ़ यूनिटी म्यूज़ियम, खैर मुझे यहीं रुक जाना पड़ेगा, क्योंकि **देशभर में म्यूज़ियम्स की लिस्ट काफ़ी लम्बी है और पहली बार देश में सभी म्यूज़ियम्स के बारे में ज़रूरी जानकारियों को कम्पाइल भी किया गया है। म्यूज़ियम किस थीम पर आधारित है, वहाँ किस तरह की वस्तुएँ रखी हैं, वहाँ की कांटेक्ट डिटेल्स क्या हैं, ये सब कुछ एक ऑनलाइन डायरेक्टरी में समाहित है। मेरा आपसे आग्रह है कि आपको जब भी मौका मिले, अपने देश के इन म्यूज़ियम्स को देखने ज़रूर जाएँ। आप वहाँ की आकर्षक तस्वीरों को #(हैशटेग) म्यूज़ियम मेमोरीज पर शेयर करना भी ना भूलें। इससे अपनी वैभवशाली संस्कृति के साथ हम भारतीयों का जुड़ाव और मज़बूत होगा।**

मेरे प्यारे देशवासियो, हम सबने एक कहावत कई बार सुनी होगी, बार-बार सुनी होगी– बिन पानी सब सून। बिना पानी जीवन पर संकट तो रहता ही है, व्यक्ति और देश का विकास भी ठप्प पड़ जाता है। **भविष्य की इसी चुनौती को देखते हुए आज देश के हर जिले में 75 अमृत सरोवरों का निर्माण किया जा रहा है। हमारे अमृत सरोवर, इसलिए विशेष हैं, क्योंकि ये आज़ादी के अमृत काल में बन रहे हैं और इसमें लोगों का अमृत प्रयास लगा है। आपको जानकर अच्छा लगेगा कि अब तक 50 हज़ार से ज़्यादा अमृत सरोवरों का निर्माण भी हो चुका है। ये जल संरक्षण की दिशा में बहुत बड़ा कदम है।**

साथियो, हम हर गर्मी में इसी तरह, पानी से जुड़ी चुनौतियों के बारे में बात करते रहते हैं। इस बार भी हम इस विषय को लेंगे, लेकिन इस बार चर्चा करेंगे जल संरक्षण से जुड़े स्टार्ट-अप्स की। एक स्टार्ट-अप है– फ्लक्सजेन। ये स्टार्ट-अप IOT इनेबल्ड तकनीक के ज़रिए वाटर मैनेजमेंट के विकल्प देता है। ये टेक्नोलॉजी पानी के इस्तेमाल के पैटर्न्स बताएगा और पानी के प्रभावी इस्तेमाल में मदद करेगा। एक और स्टार्ट एप है LivNSense। ये आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग पर आधारित प्लेटफार्म है। इसकी मदद से वाटर डिस्ट्रीब्यूशन की प्रभावी निगरानी की जा सकेगी। इससे भी पता चल सकेगा कि कहाँ कितना पानी बर्बाद हो रहा है। एक और स्टार्ट-अप है 'कुम्भी कागज़ (KumbhiKagaz)'। ये कुम्भी कागज़ (KumbhiKagaz) एक ऐसा विषय है, मुझे पक्का विश्वास है, आपको भी बहुत पसंद आएगा। 'कुम्भी

जल संरक्षण के लिए युवा शक्ति

कागज़' (KumbhiKagaz) स्टार्ट-अप उसने एक विशेष काम शुरू किया है। वे जलकुम्भी से कागज़ बनाने का काम कर रहे हैं, यानी जो जलकुम्भी, कभी जलस्रोतों के लिए एक समस्या समझी जाती थी, उसी से अब कागज़ बनने लगा है।

साथियो, कई युवा अगर इनोवेशन और टेक्नोलॉजी के ज़रिए काम कर रहे हैं, तो कई युवा ऐसे भी हैं, जो समाज को जागरूक करने के मिशन में भी लगे हुए हैं, जैसे कि छत्तीसगढ़ में बालोद जिले के युवा हैं। यहाँ के युवाओं ने पानी बचाने के लिए एक अभियान शुरू किया है। ये घर-घर जाकर लोगों को जल-संरक्षण के लिए जागरूक करते हैं। कहीं शादी-ब्याह जैसा कोई आयोजन होता है, तो युवाओं का ये ग्रुप वहाँ जाकर पानी का दुरुपयोग कैसे रोका जा सकता है, इसकी जानकारी देता है। पानी के सदुपयोग से जुड़ा एक प्रेरक प्रयास झारखंड के खूँटी ज़िले में भी हो रहा है। खूँटी में लोगों ने पानी के संकट से निपटने के लिए बोरी बाँध का रास्ता निकाला है। बोरी बाँध से पानी इकट्ठा होने के कारण यहाँ साग-सब्जियाँ भी पैदा होने लगी हैं। इससे लोगों की आमदनी भी बढ़ रही है और इलाके की ज़रूरतें भी पूरी हो रही हैं। **जन भागीदारी का कोई भी प्रयास कैसे कई बदलावों को साथ लेकर आता है, खूँटी इसका एक आकर्षक उदाहरण बन गया है। मैं, यहाँ के लोगों को इस प्रयास के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।**

मेरे प्यारे देशवासियो, 1965 के युद्ध के समय हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया था। बाद में अटल जी ने इसमें जय विज्ञान भी जोड़ दिया था। कुछ वर्ष पहले, देश के वैज्ञानिकों से बात करते हुए मैंने जय अनुसंधान की बात की थी। 'मन की बात' में आज बात एक ऐसे व्यक्ति की, एक ऐसी संस्था की, जो 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान और जय अनुसंधान', इन चारों का ही प्रतिबिम्ब है। ये सज्जन हैं, महाराष्ट्र के श्रीमान शिवाजी शामराव डोले जी। शिवाजी डोले, नासिक जिले के एक छोटे से गाँव के रहने वाले हैं। वो गरीब आदिवासी किसान परिवार से आते हैं और एक पूर्व सैनिक भी हैं। फौज में रहते हुए उन्होंने अपना जीवन देश के लिए लगाया। रिटायर होने के बाद उन्होंने कुछ नया सीखने का फैसला किया और एग्रीकल्चर में डिप्लोमा किया यानी वो 'जय जवान से, जय किसान' की तरफ बढ़ चले। अब

हर पल उनकी कोशिश यही रहती है कि कैसे कृषि क्षेत्र में अपना अधिक से अधिक योगदान दें। अपने इस अभियान में शिवाजी डोले जी ने 20 लोगों की एक छोटी-सी टीम बनाई और कुछ पूर्व सैनिकों को भी इसमें जोड़ा। इसके बाद उनकी इस टीम ने 'वेंकेटेश्वर कोआपरेटिव पॉवर एंड एग्रो प्रोसेसिंग लिमिटेड' नाम की एक सहकारी संस्था का प्रबन्धन अपने हाथ में ले लिया। ये सहकारी संस्था निष्क्रिय पड़ी थी, जिसे रिवाइव करने का बीड़ा उन्होंने उठाया। देखते-ही-देखते आज वेंकेटेश्वर कोआपरेटिव का विस्तार कई ज़िलों में हो गया है। आज ये टीम महाराष्ट्र और कर्नाटका में काम कर रही है। इससे करीब 18 हज़ार लोग जुड़े हैं, जिनमें काफी संख्या में हमारे एक्स सर्विसमैन भी हैं। नासिक के मालेगाँव में इस टीम के सदस्य 500 एकड़ से ज़्यादा ज़मीन में एग्रो फार्मिंग कर रहे हैं। ये टीम जल संरक्षण के लिए भी कई तालाब भी बनवाने में जुटी है। खास बात यह है कि इन्होंने आर्गेनिक फार्मिंग और डेयरी भी शुरू की है। अब इनके उगाए अंगूरों को यूरोप में भी एक्सपोर्ट किया जा रहा है। इस टीम की जो दो बड़ी विशेषताएँ हैं, जिसने मेरा ध्यान आकर्षित किया है, वो ये हैं– जय विज्ञान और जय अनुसंधान। इसके सदस्य टेक्नोलॉजी और मॉडर्न एग्रो प्रैक्टिसेज का अधिक-से-अधिक उपयोग कर रहे हैं। दूसरी विशेषता यह है कि वे एक्सपोर्ट के लिए ज़रूरी कई तरह के सर्टिफिकेशन पर भी फोकस कर रहे हैं। **'सहकार से समृद्धि' की भावना के साथ काम कर रही इस टीम की मैं सराहना करता हूँ। इस प्रयास से ना सिर्फ बड़ी संख्या में लोगों का सशक्तीकरण हुआ है, बल्कि आजीविका के अनेक साधन भी बने हैं। मुझे उम्मीद है कि यह प्रयास 'मन की बात' के हर श्रोता को प्रेरित करेगा।**

मेरे प्यारे देशवासियो, आज 28 मई को, महान स्वतंत्रता सेनानी, वीर सावरकर जी की जयंती है। उनके

**"कबीरा कुआँ एक है,
पानी भरें अनेक।
बर्तन में ही भेद है,
पानी सब में एक।।"**

त्याग, साहस और संकल्प-शक्ति से जुड़ी गाथाएँ आज भी हम सबको प्रेरित करती हैं। मैं, वो दिन भूल नहीं सकता, जब मैं अंडमान में, उस कोठरी में गया था, जहाँ वीर सावरकर ने कालापानी की सजा काटी थी। **वीर सावरकर का व्यक्तित्व दृढ़ता और विशालता से समाहित था। उनके निर्भीक और स्वाभिमानी स्वभाव को गुलामी की मानसिकता बिल्कुल भी रास नहीं आती थी। स्वतन्त्रता आन्दोलन ही नहीं, सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय के लिए भी वीर सावरकर ने जितना कुछ किया, उसे आज भी याद किया जाता है।**

साथियो, कुछ दिन बाद 4 जून को संत कबीरदास जी की भी जयंती है। कबीरदास जी ने जो मार्ग हमें दिखाया है, वो आज भी उतना ही प्रासंगिक है। कबीरदास जी कहते थे–

"कबीरा कुआँ एक है, पानी भरें अनेक।

बर्तन में ही भेद है, पानी सब में एक।"

यानी कुएँ पर भले भिन्न-भिन्न तरह के लोग पानी भरने आएँ, लेकिन कुआँ किसी में भेद नहीं करता, पानी तो सभी बर्तनों में एक ही होता है। **संत कबीर ने समाज को बाँटने वाली हर कुप्रथा का विरोध किया, समाज को जागृत करने का प्रयास किया। आज, जब देश विकसित होने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तो हमें संत कबीर से प्रेरणा लेते हुए, समाज को सशक्त करने के अपने प्रयास और बढ़ाने चाहिए।**

मेरे प्यारे देशवासियो, अब मैं आपसे देश की एक ऐसी महान हस्ती के बारे में चर्चा करने जा रहा हूँ, जिन्होंने राजनीति और फिल्म जगत में अपनी अद्‌भुत प्रतिभा के बल पर अमिट छाप छोड़ी। इस महान हस्ती का नाम है एन.टी. रामाराव, जिन्हें हम सभी एन.टी.आर (NTR) के नाम से भी जानते हैं। आज एन.टी.आर की 100वीं जयंती है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के बल पर वो न सिर्फ तेलुगु सिनेमा के महानायक बने, बल्कि उन्होंने करोड़ों लोगों का दिल भी जीता। क्या आपको मालूम है कि उन्होंने 300 से अधिक फिल्मों में काम किया था? उन्होंने कई ऐतिहासिक पात्रों को अपने अभिनय के दम पर फिर से जीवंत कर दिया था। भगवान कृष्ण, राम और ऐसी कई अन्य भूमिकाओं में एन.टी.आर की एक्टिंग को लोगों ने इतना पसंद किया कि लोग उन्हें आज भी याद करते हैं। **एन.टी.आर ने सिनेमा जगत के साथ-साथ राजनीति में भी अपनी अलग पहचान बनाई थी। यहाँ भी उन्हें लोगों का भरपूर प्यार और आशीर्वाद मिला। देश-दुनिया में लाखों लोगों के दिलों पर राज करने वाले एन.टी. रामाराव जी को मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।**

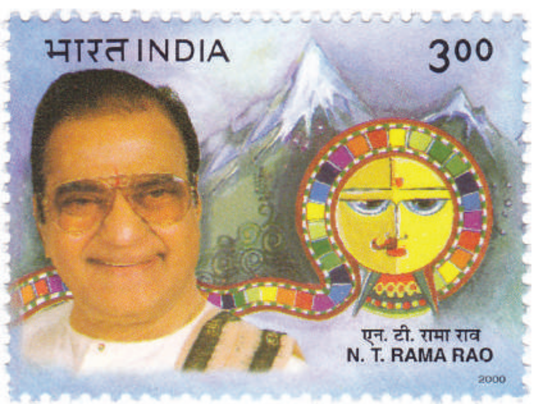

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में इस बार इतना ही। अगली बार कुछ नए विषयों के साथ आपके बीच आऊँगा, तब तक कुछ इलाकों में गर्मी और ज़्यादा बढ़ चुकी होगी। कहीं-कहीं पर बारिश भी शुरू हो जाएगी। आपको मौसम की हर परिस्थिति में अपनी सेहत का ध्यान रखना है। 21 जून को हम 'वर्ल्ड योग डे' भी मनाएँगे। उसकी भी देश-विदेश में तैयारियाँ चल रही हैं। आप इन तैयारियों के बारे में भी अपने 'मन की बात' मुझे लिखते रहिए। किसी और विषय पर कोई और जानकारी अगर आपको मिले तो वो भी मुझे बताइएगा। मेरा प्रयास ज़्यादा-से-ज़्यादा सुझावों को 'मन की बात' में लेने का रहेगा। एक बार फिर आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मिलेंगे– अगले महीने, तब तक के लिए मुझे विदा दीजिए।

नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

युवा संगम

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना का संवर्धन

"साथियो, भारत की शक्ति इसकी विविधता में है। हमारे देश में देखने के लिए बहुत कुछ है। इसी को देखते हुए शिक्षा मंत्रालय ने 'युवा संगम' नाम से एक बेहतरीन पहल की है। इस पहल का उद्देश्य 'पीपल-टू-पीपल कनेक्शन' बढ़ाने के साथ ही देश के युवाओं को आपस में घुलने-मिलने का मौका देना है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के सम्बोधन में)

"हमारा देश बहुत ही बड़ा एवं विविधतापूर्ण देश है और अगर इस विविधता में एकता के भाव को बढ़ावा देना है तो हमारे युवाओं को साथ लाना, पूरे देश की संस्कृति और परम्पराओं से उनको अवगत कराना आवश्यक है। प्रधानमंत्री द्वारा शुरू और शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित युवा संगम कार्यक्रम के लिए IIT गुवाहाटी बहुत ही आभारी है कि हमें होस्ट इंस्टीट्यूट के रूप में चुना गया।"

-प्रो. परमेश्वर के. अय्यर
कार्यवाहक निदेशक, IIT-गुवाहाटी

भारत की समृद्ध विविधता, हमारे समाज के ताने-बाने में अंतर्निहित है। इसकी विशिष्ट संस्कृतियों, परम्पराओं, व्यंजनों और क्षेत्रों से यह अच्छी तरह स्पष्ट है। एक साझा इतिहास और आपसी समझ की भावना से निर्मित इस विविधता ने भारत की समग्र राष्ट्रीय पहचान बनाई है, जो राष्ट्रीयता के एक ऊँचे प्रकाश स्तम्भ के रूप में खड़ा है। इसे पोषित और पल्लवित करने की आवश्यकता है।

भारत की विशिष्ट पहचान पर गर्व करना और विविधता को जीवन-शैली के रूप में अपनाना हमारे देश को समृद्ध और सशक्त भी बनाता है। एक अखंड भारत, एक समृद्ध अखंड भारत बनाने के विचार के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 31 अक्टूबर, 2015 को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की घोषणा की। हमारे राष्ट्र की विविधता में एकता का जश्न मनाना और विभिन्न समुदायों, धर्मों और जातियों के बीच एकजुटता की भावना को प्रज्वलित करना, इसका लक्ष्य था।

इस अवसर पर डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुभव को याद करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा, "जब डॉ. कलाम ने पहली बार ट्रेन से रामेश्वरम से दिल्ली की यात्रा शुरू की, तो उन्हें हर घंटे के बाद एक नई भाषा, नई बोली और नए व्यंजन मिले। ट्रेन में विविधता से भरपूर मिनी-इंडिया की एक झलक पाकर वे चकित थे, जिसे वे पुस्तकों के माध्यम से ठीक से समझ नहीं सकते थे। उन्होंने अपनी ट्रेन यात्रा के दौरान इसे एक ही बार में समझ लिया।"

डॉ. कलाम के अनुभव के आधार पर और 'स्पिरिट ऑफ़ इंडिया' को मज़बूत करने का मार्ग प्रशस्त करने के लिए, प्रधानमंत्री के नेतृत्व में शिक्षा मंत्रालय द्वारा विभिन्न मंत्रालयों के सहयोगात्मक प्रयास के रूप में पूरे देश के युवाओं के बीच सम्पर्क बढ़ाने के साथ-साथ उनके बीच सहानुभूति कायम करने के उद्देश्य से 'युवा संगम' की अवधारणा तैयार की गई।

भारत दुनिया की सबसे युवा आबादी वाला देश है और भारतीय युवा देश का भविष्य है, जो आने वाली पीढ़ी के लिए अपने देश को आकार देगा। 'युवा संगम' का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि युवा एक बेहतर भारत के लिए अपनी दृष्टि में एकजुट हों। यह पहल युवाओं के लिए 7-दिवसीय एक्सपोज़र टूर आयोजित करने पर केन्द्रित है, जो उन्हें एक-दूसरे की विरासत, संस्कृति, रीति-रिवाज़ों, परम्पराओं, व्यंजनों, भाषाओं, वेशभूषा, कला, शिल्प, संगीत, व्यवसायों को निकटता से देखते हुए भारत की विविधता को समझने और पहचानने में और 'भारतीय' होने में निहित एकता और महानता की भावना को पहचानने के लिए सक्षम बनाता है।

अपने 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने 'युवा संगम' कार्यक्रम के दो

प्रतिभागियों – अरुणाचल प्रदेश के ग्यामार न्योकुम और बिहार की विशाखा सिंह के साथ बातचीत की, जिन्होंने अपनी संस्कृति के अलावा विभिन्न संस्कृतियों के बारे में सीखने के अपने बहुमूल्य अनुभवों को साझा किया। 7-दिवसीय एक्सपोज़र टूर के दो चरणों में राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों के 2,200 से अधिक छात्रों ने बहुआयामी एक्सपोज़र के लिए भाग लिया। इस कार्यक्रम ने जीवन के कई पहलुओं, विकास स्थलों, हाल की उपलब्धियों और मेजबान राज्य में एक युवा जुड़ाव का व्यापक अनुभव प्रदान किया। एक्सपोज़र टूर के दौरान, प्रतिनिधियों ने शहरों और गाँवों में आम जनता के साथ-साथ राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों, केन्द्रीय मंत्रियों, पद्म पुरस्कार विजेताओं, प्रतिष्ठित खिलाड़ियों, कलाकारों, प्रशासकों, नागरिक समाज संगठनों, उद्योग जगत के दिग्गजों से बातचीत की। उन्होंने राज्य के महत्त्वपूर्ण स्थलों का भी दौरा किया और वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान, जी20 वॉक, मिलेट को प्रोत्साहन, योग और खेल गतिविधियों में भाग लिया, जिससे उन्हें राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका के प्रति संवेदनशील बनने में मदद मिली।

इस कार्यक्रम ने भारत के विभिन्न हिस्सों के युवाओं के बीच मज़बूत सम्बन्ध बनाने में मदद की है और उन्हें 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को आगे बढ़ाते हुए भारत के बारे में बेहतर समझ विकसित करने में भी मदद की है।

पिछले कुछ वर्षों में सरकार ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम के तहत विभिन्न राज्यों/ केन्द्रशासित प्रदेशों के लोगों के बीच सम्पर्क का विस्तार किया है और आपसी समझ को बढ़ावा दिया है। देशभर में भाषा सीखने, परम्पराओं, कला की विधाओं, खेल, पर्यटन और व्यंजनों के क्षेत्रों में एक सतत और संरचित सांस्कृतिक सम्बन्ध को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों को जन-जन के बीच सम्पर्क बढ़ाने और एक समावेशी समाज को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया है, क्योंकि जब कोई राष्ट्र एकजुट होता है, तो वह सशक्त होता है।

सरकार देश के नागरिकों को अन्य राज्यों की विरासत, संस्कृति, कला, हस्तशिल्प और पारम्परिक व्यंजनों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने में लगातार जुटी है। राज्यों के बीच सदियों पुराने सम्बन्धों की फिर से पुष्टि और खोज के लिए काशी-तमिल संगमम्, सौराष्ट्र-तमिल संगमम् का उत्सव मनाने से लेकर भगवान कृष्ण और रुक्मिणी के पवित्र मिलन का जश्न मनाने और गुजरात और उत्तर-पूर्व क्षेत्र के बीच अभिन्न बन्धन को पहचानने के लिए माधवपुर मेले को पुनर्जीवित करना और जन भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए 'एकता दिवस' प्रतियोगिताओं का आयोजन करना इनमें शामिल है।

आज जब भारत प्रधानमंत्री द्वारा परिकल्पित अमृत काल में प्रवेश कर रहा है, युवा संगम जैसी पहल हमारे देश के भविष्य के नेताओं के बीच समझ की एक सामान्य भावना पैदा करती है, जो पूरे देश में प्रतिध्वनित होगी और वास्तव में श्रेष्ठ भारत के निर्माण में अत्यधिक योगदान देगी।

भारत की सांस्कृतिक विविधता का परस्पर समन्वय

युवा संगम ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' मैट्रिक्स के तहत जोड़े गए देश भर के उच्च शिक्षा संस्थानों से चयनित छात्रों की भागीदारी की परिकल्पना की, जहाँ वे युग्मित राज्य* की संस्कृति और परम्परा का अनुभव कर सकें। पहले चरण की शुरुआत पूर्वोत्तर राज्यों पर विशेष ध्यान देने के साथ हुई और दूसरे चरण के लिए जोड़े गए राज्य इस प्रकार रहे :

हिमाचल प्रदेश, लद्दाख और गोवा

उत्तर प्रदेश और केरल और लक्षद्वीप

पंजाब और महाराष्ट्र और दादरा-नगर हवेली, दमन-दीव

ओडिशा और राजस्थान

उत्तराखंड और तेलंगाना

मध्य प्रदेश और कर्नाटक

तमिलनाडु और बिहार

मिजोरम और हरियाणा (चरण-।)

अंडमान निकोबार और झारखंड

पश्चिम बंगाल और पुडुचेरी

* प्रत्येक चरण के लिए युग्मित राज्य बदलते हैं।

विविध परम्पराओं और संस्कृति का आदान-प्रदान और प्रसार

युवा संगम का उद्देश्य विविध सामाजिक-आर्थिक और जीवन के अनुभवों की समझ को बढ़ावा देकर भारतीय युवाओं में संवेदना पैदा करना था।

कार्यक्रम के तथ्य

सांस्कृतिक आदान-प्रदान : प्रतिभागियों को सांस्कृतिक प्रदर्शन, शैक्षिक कार्यशालाओं और लैंग्वेज क्लासेस जैसी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से एक-दूसरे की संस्कृतियों के बारे में जानने का अवसर मिला।

पीपल-टू-पीपल कनेक्शन : प्रतिभागियों को दूसरे राज्यों के साथियों से मिलने और बातचीत करने का अवसर मिला, जिनके साथ उन्होंने अपने अनुभव साझा किए।

राष्ट्रीय एकता : भारत के विभिन्न हिस्सों से युवाओं को एक साथ लाकर, इस कार्यक्रम ने भारत के युवाओं में एकता की भावना को बढ़ावा दिया।

केन्द्र बिन्दु :

- पर्यटन
- परम्परा
- प्रगति
- परस्पर सम्पर्क
- प्रौद्योगिकी

युवा संगम के चरण- I और II में

37,000+
पंजीकरण प्राप्त हुए

2,200+
छात्रों ने भाग लिया

45+
दौरे आयोजित हुए

45+
संस्थान जुड़े

"यह मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपने इतने बिज़ी शेड्यूल से समय निकालकर मुझसे बात की। उन्होंने मुझे युवा संगम के अनुभव को साझा करने को कहा और मैंने इस संगम में जो-जो सीखा, उसके बारे में पूछा। प्रधानमंत्री जी ने मुझे अपने देश के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान देने के लिए प्रेरित किया और साथ ही यह भी कहा कि मैं दूसरे युवाओं तक इस कार्यक्रम के फ़ायदे पहुँचाऊँ और इससे जुड़ने के लिए उनको प्रेरित करूँ। उन्होंने मुझे सोशल मीडिया पर ब्लॉग लिखकर अपने अनुभव दर्ज करने को भी कहा।"

ग्यामर न्योकुम, अरुणाचल प्रदेश

"युवा संगम में मेरे साथ और भी बहुत सारे डेलीगेट्स ने भाग लिया था और मैंने यह उम्मीद बिलकुल नहीं की थी कि प्रधानमंत्री जी का मुझे कॉल आएगा और मेरी उनसे बात होगी। प्रधानमंत्री जी से बात करना मेरे जीवन का सबसे मूल्यवान अनुभव था। मेरे दोस्तों, प्रोफ़ेसर्स और प्रिंसिपल ने मुझे बधाई दी। बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री ने मुझसे रजिस्ट्रेशन से लेकर तमिलनाडु तक के एक्सपीरियंस के बारे में पूछा। उन्होंने मुझसे तमिलनाडु के बारे में, वहाँ के कल्चर और खान-पान के बारे में पूछा।

शुरुआत में युवा संगम को लेकर मैं कन्फ्यूज़्ड थी, पर टूर के 11 दिनों के दौरान तमिलनाडु में मैंने वहाँ का कल्चर देखा, जो कि बिहार से काफ़ी अलग है। मैंने वहाँ के आर्किटेक्चर के बारे में सीखा, स्टेट की ग्रीनरी को देखा, मन्दिर देखे, ISRO में गए, राज भवन में गए। यह पूरा अनुभव बहुत ही यादगार था और मैं चाहूँगी कि हर स्टूडेंट इस टूर के लिए अप्लाई करे और किसी दूसरे स्टेट के बारे में जाने और उन्हें वहाँ के लोगों से इंटरेक्ट करने का मौका मिले, जैसे मुझे मिला।"

विशाखा सिंह, बिहार

विशाखा सिंह के युवा संगम के अनुभव को सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

युवा संगम - जीवन का अभूतपूर्व अनुभव

धर्मेंद्र प्रधान
शिक्षा तथा कौशल विकास और
उद्यमशीलता मंत्री

चाहे खेती की नई विधियाँ हों, नए युग की तकनीक का प्रयोग हो, अनुसंधान तथा स्वास्थ्य सेवा में प्रगति हो या Gen Z के लिए मज़ेदार तथ्य साझा करना हो, प्रधानमंत्री के 'मन की बात' का हर एपिसोड श्रोताओं के लिए सीखने का अभूतपूर्व अनुभव रहा है।

राष्ट्रीय मंच पर स्वयं मोदीजी से सम्मान पाकर न केवल देश भर के नागरिकों का मनोबल बढ़ा है, बल्कि इस समर्थन के कारण कई छोटे व्यवसायों को फलने-फूलने और युवा उद्यमियों को समृद्ध बनने में मदद मिली है। कई अन्य लोगों को भी इन व्यक्तियों से प्रेरणा मिली है। चाहे वह स्कूली बच्चे हों, शिक्षक हों, उद्यमी हों, टेक्नोक्रेट हों या नवोन्मेषी गृहिणियाँ हों, प्रधानमंत्री देश की प्रतिभाओं की सराहना करने और उन्हें बढ़ावा देने से कभी पीछे नहीं हटे।

ऐसा ही एक उदाहरण 'मन की बात' के 101वें एपिसोड में 'युवा संगम' का उल्लेख है। प्रधानमंत्री ने बिहार और अरुणाचल प्रदेश के कॉलेजों के दो विद्यार्थियों से बात की, जिन्होंने इस अनूठे देशव्यापी पीपल-टू-पीपुल कनेक्शन कार्यक्रम में भाग लिया और अपने अनुभवों को पूरे देश के साथ साझा किया।

शिक्षा मंत्रालय के 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के विचार के तहत, युवा संगम पीपल-टू-पीपल कनेक्शन और देश भर के युवाओं के बीच सद्भाव बढ़ाने के उद्देश्य से एक सहयोगी प्रयास के रूप में परिकल्पित किया गया है। यह युवा मस्तिष्क की क्षमता का उपयोग करने और उन्हें वृद्धि तथा विकास के अवसर प्रदान करने की दृष्टि से एक परिवर्तनकारी पहल है। इसमें पाँच 'प' - पर्यटन, परम्परा, प्रगति, प्रौद्योगिकी और परस्पर सम्पर्क के क्षेत्रों में युवाओं की भागीदारी की परिकल्पना की गई है। यह कार्यक्रम युवा सशक्तीकरण के क्षेत्र में एक गेम-चेंजर बनने की राह पर है।

अरुणाचल प्रदेश के मिकेनिकल इंजीनियरिंग के प्रथम वर्ष के छात्र ग्यामार नियोकुम के अनुभवों को सुनकर बहुत खुशी हुई, जिन्होंने युवा संगम कार्यक्रम के माध्यम से राजस्थान की अपनी पहली यात्रा की। इसी तरह, बिहार के सासाराम से कम्प्यूटर विज्ञान की दूसरे वर्ष की छात्रा विशाखा सिंह ने अपने जीवन में पहली बार तमिलनाडु की यात्रा करने, इसरो का दौरा करने और तमिलनाडु के राज्यपाल के साथ बातचीत करने के अपने अनुभव और उत्सुकता को साझा किया। जीवन भर का यह अनुभव, वह कभी नहीं भूल सकतीं। राज्य के व्यंजनों का स्वाद चखने और जीवन भर के लिए नए दोस्त बनाने के उनके किस्से सुनना सभी के लिए रुचिकर था। इन दोनों युवाओं ने न केवल यह अद्भुत यात्रा की, बल्कि उन्हें इसे पूरे देश के साथ साझा करने का अवसर भी मिला। इसके लिए मोदीजी के 'मन की बात' को धन्यवाद!

अब तक, 2,200 विद्यार्थियों ने देश भर में यात्रा की है, और इस कार्यक्रम में सभी राज्य और केंद्रशासित प्रदेश शामिल हैं। शिक्षा मंत्रालय के तहत कई शिक्षण संस्थानों ने अपने परिसरों में छात्रों के शानदार प्रवास और समग्र अनुभव की सुविधा के लिए एक-दूसरे के साथ भागीदारी की है।

विभिन्न राज्यों में भ्रमण के दौरान, देश के विकास और तकनीकी प्रगति की विस्मयकारी गति को देखकर युवा चकित रह गए। मेट्रो नेटवर्क, नए हवाई अड्डे, बंदरगाह, राजमार्ग, आईटी उद्योग और अनेक पहलुओं ने उन्हें अपने-अपने राज्य और भारत की उच्च आकांक्षाओं के लिए प्रेरित किया। उनके विवरण भारत को 'श्रेष्ठ भारत' बनाने में योगदान देने के उनके दृढ़ विश्वास से भरे हुए थे।

शानदार विविधता में भारत की एकता, सैकड़ों विविध परम्पराओं, संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों, संगीत, कला, व्यंजनों, वेशभूषा आदि पर गर्व करते हुए और उसका प्रचार करते हुए देश की समग्रता और एकता की भावना की साक्षी है।

हमारे देश के युवा, जो दुनिया में सबसे बड़ी संख्या में हैं, भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच 'विविधता में एकता' को मज़बूत करने के लिए एक सेतु हो सकते हैं। जब हमारे देश के युवा एक-दूसरे की संस्कृतियों, परम्पराओं, भाषाओं, विरासत, रीति-रिवाज़ों को समझेंगे और उनका सम्मान करेंगे तो वे हमारी आबादी की पूरी क्षमता का उपयोग करने में योगदान दे सकते हैं, जो अंततः भारत को एक विकसित राष्ट्र बनने में मदद करेगा। यह वास्तव में 'विकसित भारत' का निर्माण करेगा।

हमारे प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में विभिन्न देशों के उन दिग्गज व्यवसायियों के बारे में अपने अनुभव भी साझा किए हैं जिन्होंने अपनी युवावस्था के दौरान पूरे भारत में बैकपैकिंग के माध्यम से बहुत कुछ सीखा है। इसी तर्ज पर उन्होंने देश के युवाओं से युवा संगम प्रतिभागियों से प्रेरणा लेने और भारत के विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा करने का भी आह्वान किया।

युवा संगम की संकल्पना के पीछे प्रधानमंत्री के अलावा अन्य कोई भी प्रेरणा नहीं रही है और उन्होंने कार्यक्रम की शुरुआत से ही इसमें उत्साहपूर्वक सहयोग दिया है। मुझे पूरी उम्मीद है कि युवा संगम कार्यक्रम के प्रतिभागी ब्लॉग लिखने और सोशल मीडिया पर अपने अनुभव साझा करने के प्रधानमंत्री मोदी के सुझाव को मानेंगे और लाखों लोगों को जीवन को परिवर्तित करने वाली इस गतिविधि का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित करेंगे।

प्रो. परमेश्वर के. अय्यर
कार्यवाहक निदेशक, IIT-गुवाहाटी

सांस्कृतिक समन्वय में युवाओं की भागीदारी

भारत सरकार द्वारा आयोजित युवा संगम कार्यक्रम हमारे देश के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। हमारा देश बड़े आकार का विविधतापूर्ण देश है और अगर इस विविधता में एकता के भाव को बढ़ावा देना है तो हमारे युवाओं को साथ लाना और पूरे देश की संस्कृति और परम्परा से उनको अवगत कराना आवश्यक है। प्रधानमंत्री द्वारा शुरू और शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित युवा संगम कार्यक्रम के लिए IIT गुवाहाटी बहुत ही आभारी है कि हमें होस्ट इंस्टीट्यूट के रूप में चुना गया और यह मौका दिया गया कि हम अलग-अलग राज्यों से आए विद्यार्थियों को असम की परम्परा व कल्चर दिखा सकें। युवा संगम के दौरान IIT गुवाहाटी की एक विशेष बात यह थी कि यहाँ हमने पाँच अलग-अलग राज्यों से विद्यार्थियों को होस्ट किया है, जो जम्मू-कश्मीर, चंडीगढ़, गुजरात, कर्नाटक और दिल्ली से थे। तीन राज्यों के 200 से ज़्यादा विद्यार्थी यहाँ पर ठहरे थे और सभी बच्चे एक साथ रह रहे थे। इस तरह विद्यार्थियों का साथ रहना देश को जोड़ने का एक बहुत बड़ा मौका था, जो कभी हमारे समय में नहीं था। हमारा प्रयास था कि बच्चे असम का कल्चर देखें। इससे उनको काफ़ी फायदा हुआ है और मैं मानता हूँ कि यह कार्यक्रम और भी आगे बढ़ना चाहिए, जिसमें IIT गुवाहाटी का पूरा सहयोग रहेगा।

हमारे यूथ हमारी सबसे बड़ी ताकत हैं। मेरा यह मानना है कि देश की संस्कृति और परम्परा के साथ-साथ बाकी चीज़ों जैसे IIT जैसे प्रमुख इंस्टीट्यूट में साइंस एंड टेक्नॉलॉजी का एक्सपोज़र भी युवाओं के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान करेगा। जो भी विद्यार्थी यहाँ आए हैं, उन्हें पता चला है कि देश में काफ़ी ऐसी चीज़ें हैं, जिनमें वह अपना योगदान दे सकते हैं और यह सब सीखकर युवाओं की क्षमता को और अधिक विस्तार मिलेगा, जिससे वे नई चीज़ें सीख कर आने वाली पीढ़ी का भी मार्गदर्शन कर सकेंगे। युवा संगम कार्यक्रम से IIT गुवाहाटी के बच्चों को भी बाकी इंस्टीट्यूट से काफ़ी अलग-अलग चीज़ें जैसे साइंस एंड टेक्नॉलॉजी और वहाँ के विशेष कल्चर को देखने का मौका मिला।

यह पाँच-छह दिन का कार्यक्रम हमने ऐसे प्लान किया था कि बच्चों को गुवाहाटी के अलग-अलग गाँव, बॉर्डर एरिया, हेरिटेज साइट्स देखने का मौका मिले। हमने उनके लिए 'बडी प्रोग्राम' का भी आयोजन किया था जहाँ उनको असम के तीन अलग-अलग गाँव में ले जाया गया था। जम्मू-कश्मीर, कर्नाटक और गुजरात से आए बच्चों को यहीं का भोजन कराया गया था, जहाँ उन्हें असम के पकवानों के बारे में पता चला। उन्हें यह भी पता चला कि यहाँ लोग कैसे खाते हैं, कैसे रहते हैं, यहाँ लोग कितने सिम्पल हैं और उनकी ज़िन्दगी में कितनी सादगी है। सीमा बल से हम लोगों को बहुत मदद मिली। पहले दिन से ही वे बच्चों के साथ रहे और बच्चों को भूटान के बॉर्डर टाउन भी ले गए। दूसरी बड़ी बात यह हुई कि हमारे राज्यपाल महोदय गुलाब चंद कटारिया जी के साथ राजभवन में बच्चों का एक महत्त्वपूर्ण इंटरेक्शन हुआ। स्पोर्ट्स रिलेटेड एक्टिविटीज़ के लिए बच्चों को लक्ष्मीबाई नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ फिजिकल एजुकेशन ले जाया गया और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरुष और महिला खिलाड़ियों से भी उनकी मुलाक़ात कराई। हमने स्पेशल स्पोर्ट्स और योगा सेशन भी उनके लिए आयोजित किया था, साथ ही हमने उनके लिए इंटरप्रेन्योरशिप व टेक्नोलॉजी पर विशेष चर्चा का आयोजन किया था।

पूर्वोत्तर में बहुत सारी ट्राइब्स हैं, जिनकी भाषाएँ लुप्त होती जा रही हैं और उनके बचाव के लिए तथा उनको आगे ले जाने के लिए लिंग्विस्टिक साइंस का उपयोग किया जा रहा है। हमने बच्चों को लैंग्वेज प्रोसेसिंग डेवलपमेंट के बारे में भी बताया ताकि वे भी अपना योगदान इस क्षेत्र में दे सकें। जापान से यहाँ आए हुए बच्चों को भी हमने युवा संगम कार्यक्रम से जोड़ा, जिसमें उनकी भागीदारी बढ़-चढ़ कर रही। ऐसा किसी भी अलग राज्य में नहीं हुआ। IIT गुवाहाटी में हमने युवा संगम से बच्चों को न केवल राज्य को जानने का मौका दिया, बल्कि युवाओं ने जापानी छात्रों से भी बहुत कुछ सीखा। हमने बच्चों को असम की सांस्कृतिक समृद्धिता और यहाँ की विविधता दिखाई और हम यह उम्मीद करते हैं कि बाकी राज्यों के साथ मिलकर वे देश को एक सन्देश दें कि पूर्वोत्तर भी प्रगति कर रहा है।

भारतीय संग्रहालय

अतीत, वर्तमान और भविष्य की बोधगम्यता के प्रतीक

“जब हम इतिहास की यादों को संजोकर रखते हैं तो वो आने वाली पीढ़ियों की बहुत मदद करता है। कई बार म्यूज़ियम में हमें नए सबक मिलते हैं तो कई बार हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आम जनता और विद्यार्थियों के बीच संग्रहालयों के प्रति रुचि बढ़ रही है, जो भारत के समृद्ध इतिहास, संस्कृति और कला के प्रति बढ़ती जागरूकता, पर्यटन के बढ़ते महत्त्व और शैक्षिक तथा सांस्कृतिक संस्थानों के रूप में संग्रहालयों को बढ़ावा देने के सरकार के प्रयासों का सकारात्मक परिणाम है।”

-डॉ. बी.आर. मणि
महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय

भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का देश है। इस विरासत के मुख्य आकर्षण इसकी कला, वास्तुकला, शास्त्रीय नृत्य, संगीत, वस्त्र, वनस्पतियों तथा जीवों, भोजन, शिल्प और ज्ञान प्रणालियों के ख़ज़ाने में निहित हैं। सराहना के योग्य होने के साथ-साथ, दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में शामिल भारतीय सभ्यता की अद्वितीय बहुरूपदर्शक विविधता, इसके संरक्षण तथा संवर्धन को अनिवार्य करती है और इसके लिए संग्रहालयों से बेहतर स्थान क्या हो सकते हैं?

भारत में 1,000 से अधिक संग्रहालय हैं, जो हमारी वर्षों पुरानी सांस्कृतिक, धार्मिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के समृद्ध और विविध मिश्रण का प्रतिनिधित्व करते हैं। 1814 में स्थापित, कोलकाता का भारतीय संग्रहालय देश का पहला सार्वजनिक संग्रहालय था। इसके बाद, समूचे भारत में विभिन्न रुचियों के कई संग्रहालय बनाए गए, जिन्होंने हमारे समाज के इतिहास को संरक्षित करने में अभिन्न भूमिका निभाई है। यह इतिहास अलग-अलग रूपों में मौजूद है, जैसे कि कला, संस्कृति, विज्ञान या प्राकृतिक वस्तुएँ। पेंटिंग, नक्काशियों, दस्तावेज़ों, मूर्तियों, मुद्राओं, औज़ारों और हथियारों आदि का प्रदर्शन हमें अपने पूर्वजों के

सामाजिक और आर्थिक जीवन की झलक देता है और हमें बताता है कि कैसे हमारा देश, विभिन्न समुदाय, संस्कृतियाँ, और विचारधाराएँ अस्तित्व में आए।

संग्रहालय, आगन्तुकों की रुचि को आकर्षित करने और उनका मनोरंजन करने के अलावा, शैक्षिक स्थानों के रूप में दोहरी भूमिका निभाते हैं, जो सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक महत्त्व की वस्तुओं और सामग्रीयों को प्रदर्शित करते हैं। दृष्टि, स्पर्श, श्रवण और गंध जैसी इन्द्रियों के माध्यम से संग्रहालयों में अनुभवात्मक अधिगम (एक्सपीरिएंशियल लर्निंग) छात्रों की संवेदी साक्षरता (सेंसरी लिटरेसी) को बढ़ाकर उनकी अवधारणात्मक समझ (कॉन्सेप्चुअल अंडरस्टैंडिंग) को गहरी और सुगम बनाता है। संग्रहालय अनुसंधान के लिए भी अपरिहार्य साबित होते हैं, क्योंकि वे विद्वानों को कलाकृतियों, वस्तुओं और दस्तावेजों जैसे स्रोतों तक पहुँच प्रदान कर सकते हैं। संग्रहालय सामुदायिक खजाने हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि देश का इतिहास और संस्कृति लुप्त न हो जाए और युवा पीढ़ियों को शिक्षित करना जारी रखें।

पिछले कुछ वर्षों में हमारी संस्कृति और विरासत के बारे में हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तनकारी बदलाव आया है। औपनिवेशिक अतीत और मानसिकता के साये में रहने के बाद, भारत अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अपनी सभ्यता और सांस्कृतिक गहराई के प्रति जागरूक हो रहा है। प्रधानमंत्री के भाषण और सम्बोधन, सरकार द्वारा की गई कई पहलों के साथ, उस प्रतिबद्धता को प्रतिबिम्बित करते हैं, जो उन्होंने 2022 में लाल किले की प्राचीर से ‘हमारी विरासत पर गर्व करने’ के बारे में व्यक्त की थी।

आज तक लगभग 240 प्राचीन कलाकृतियाँ भारत वापस लाई गई

हैं– चाहे वह बनारस से चुराई गई माँ अन्नपूर्णा की मूर्ति हो, गुजरात से चुराई गई महिषासुर मर्दिनी की मूर्ति हो, या चोल साम्राज्य के दौरान बनाई गई नटराज की मूर्तियाँ हों। भारत की विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ, सरकार 'अमृत महोत्सव' के दौरान नए सांस्कृतिक ढाँचे का भी निर्माण कर रही है, जिसमें स्वतंत्रता आन्दोलन में हमारे आदिवासी समुदाय के योगदान को अमर बनाने के लिए 10 विशेष संग्रहालयों का निर्माण; स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों के योगदान और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के लिए उनके सशस्त्र प्रतिरोध (एक पहलू जो अक्सर स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्यधारा की कहानी से बाहर रह जाता है) को प्रदर्शित करने वाली कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में बिप्लबी भारत गैलरी; दांडी का राष्ट्रीय नमक सत्याग्रह स्मारक; स्वतंत्र भारत के सशस्त्र संघर्षों का हिस्सा रहे भारतीय सशस्त्र बलों के सैनिकों को सम्मान देने और याद करने के लिए बनाया गया राष्ट्रीय समर स्मारक; देश के सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों को समर्पित प्रधानमंत्री संग्रहालय; मूक फिल्मों से लेकर स्पेशल इफ़ेक्ट्स तक भारतीय सिनेमा की यात्रा को प्रदर्शित करने वाला भारतीय सिनेमा का राष्ट्रीय संग्रहालय; देश के विभिन्न आकांक्षी जिलों में 75 विज्ञान संग्रहालय; और आगामी 'युगे युगीन भारत' राष्ट्रीय संग्रहालय जो भारतीय सभ्यता की निरंतर यात्रा को दर्शाएगा, ये सब शामिल हैं।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में पिछले नौ वर्षों के दौरान सौ से अधिक संग्रहालय चालू किए गए हैं और खोले गए हैं। सरकार की प्रतिबद्धता 3D प्रोजेक्शन, ऑगमेंटेड/वर्चुअल रियेलिटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी नए युग की तकनीकों की मदद से देश भर में मौजूदा संग्रहालयों के आधुनिकीकरण और उन्नयन के नए कार्यक्रमों में भी दिखाई देती है। प्रौद्योगिकी इंटरफेस, नवीन क्यूरेटोरियल कौशल और कल्पनाशील कहानी कहने से भारत के पारम्परिक संग्रहालयों को अतीत के गौरव के प्रदर्शन स्थलों से अधिक संवादात्मक और अनुभवात्मक बनने में मदद मिल रही है। संस्कृति मंत्रालय ने हाल ही में 'भारत में संग्रहालयों की पुनर्कल्पना' पर अपनी तरह का पहला वैश्विक शिखर सम्मेलन आयोजित किया और इस सम्मेलन से मिली सीख का उपयोग नए संग्रहालयों के विकास के लिए एक ब्लूप्रिन्ट तैयार करने, नवीकरण ढाँचे का पोषण करने और मौजूदा संग्रहालयों को फिर से जीवंत करने के लिए किया जा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय एक्सपो का आयोजन, संग्रहालयों के भौतिक और भौगोलिक स्थानों के परे विषय-आधारित संग्रह और कलाकृतियों तक पहुँच प्रदान करने वाले राष्ट्रीय डिजिटल भंडार का निर्माण, अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर संग्रहालयों में निःशुल्क प्रवेश की सुविधा, Mu(See)um हैकाथॉन और म्यूज़ियम्स ऑफ़ इंडिया मोबाइल ऐप का शुभारम्भ जैसी अन्य पहल भारत में संग्रहालयों को और अधिक सुलभ और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का माध्यम बना रही हैं।

भारत की मौजूदा संग्रहालय विरासत इतिहास के विभिन्न प्रसंगों और कालखंडों का दूरस्थ रूप से अनुभव करने और लोकतंत्र, शौर्य, देशभक्ति तथा अहिंसा के हमारे सदियों पुराने विचारों को आत्मसात करने का एक द्वार है, जो किसी आगन्तुक को अपने क्षितिज का विस्तार करने में सक्षम बनाता है। एक लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में भारत के विकास और इसकी विविधता को इसकी पूर्ण सरगर्मी में शायद ही कहीं अनुभव किया जा सकता है, सिवाय उन जगहों के, जहाँ एक साथ यह सब देखा जा सकता हो। वाकई में, संग्रहालय वर्तमान की संस्थाएँ हैं, जो अतीत की घटनाओं की नींव पर बनी हैं और भविष्य की मशाल थामे हुए हैं।

International MUSEUM EXPO-2023

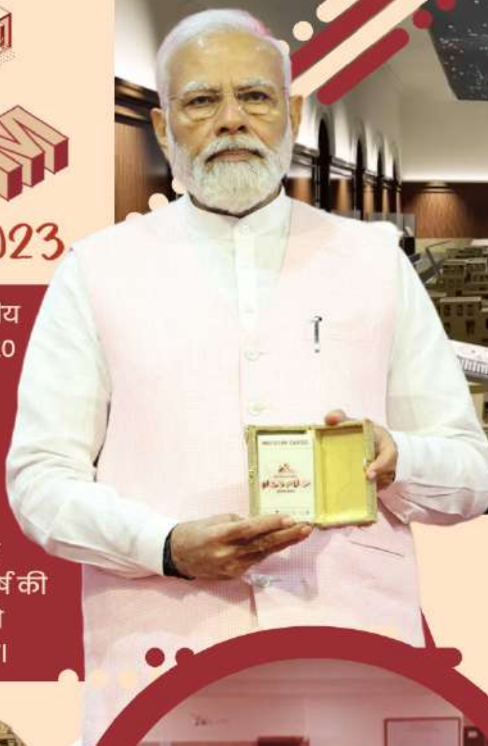

प्रधानमंत्री ने नई दिल्ली में उत्तर और दक्षिण ब्लॉक में आगामी राष्ट्रीय संग्रहालय के एक आभासी पूर्वाभ्यास का भी उद्घाटन किया।

प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटित तीन-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय एक्सपो (IME) का आयोजन 18 मई से 20 मई, 2023 तक नई दिल्ली में किया गया। 47वें अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस का जश्न मनाने के लिए संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित इस एक्सपो में विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं, मास्टरक्लास, चर्चाओं और सांस्कृतिक प्रदर्शनों के माध्यम से भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित किया गया। इस वर्ष की थीम थी संग्रहालय, स्थिरता और भलाई यह एक्सपो 'आज़ादी के अमृत महोत्सव' से ही जुड़ा कार्यक्रम था।

IME में देश भर के 25 से अधिक संग्रहालयों और संस्थानों से ली गई 75 वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा एक्सपो में भारत में संग्रहालयों में उपयोग की जा रही तकनीकों को प्रदर्शित करने के लिए इन-सीटू टेक्नो मेला, एक इन-सीटू कंज़र्वेशन लैब, संग्रहालयों और संग्रहालय विज्ञान से सम्बन्धित पुस्तकों पर 500 बुक कवर की एक प्रदर्शनी, छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय का म्यूज़ियम ऑन व्हील्स तथा आयुर्वेद के सिद्धान्तों पर आधारित क्यूरेटेड गैस्ट्रोनॉमिकल अनुभव शामिल थे।

IME शुभंकर
चेन्नापटनम कला शैली में लकड़ी से बनी डांसिंग गर्ल का एक समकालीन संस्करण।

अ डे एट दी म्यूज़ियम
यह ग्राफ़िक पुस्तक राष्ट्रीय संग्रहालय में आने वाले बच्चों के एक समूह को चित्रित करती है और युवा पाठकों को हमारे देश की समृद्ध विरासत को संरक्षित करने के महत्त्व और संग्रहालय में उपलब्ध विभिन्न कैरियर के अवसरों को समझने में मदद करती है।

भारतीय संग्रहालयों की निर्देशिका :
1,000 भारतीय संग्रहालयों की एक व्यापक सूची।

कर्त्तव्य पथ का पॉकेट मैप :
यह मैप विभिन्न सांस्कृतिक स्थानों, संस्थानों व प्रतिष्ठित रास्तों के इतिहास पर प्रकाश डालता है।

म्यूज़ियम कार्ड्स :
संक्षिप्त जानकारी के साथ देश भर के प्रतिष्ठित संग्रहालयों के सचित्र अग्रभाग वाले 75 कार्ड्स का एक सेट।

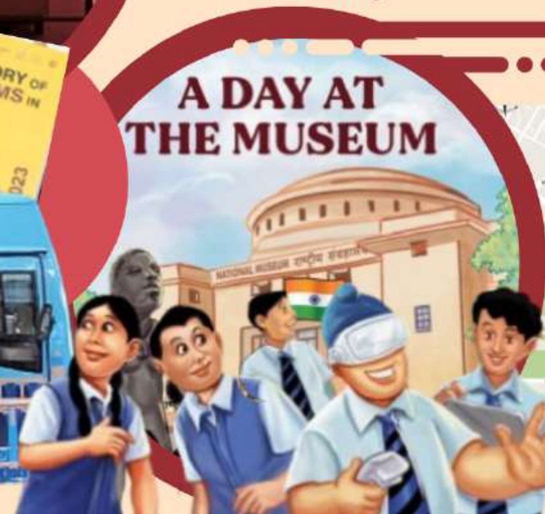

भारत की अनूठी कहानियों का संग्रह

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में भारत के कुछ अनोखे संग्रहालयों का ज़िक्र किया, जो हमें अतीत के बारे में शिक्षित करने के साथ-साथ वर्तमान को समझने और हमें भविष्य के लिए तैयार करने में भी मदद करते हैं। आइए एक नज़र डालते हैं।

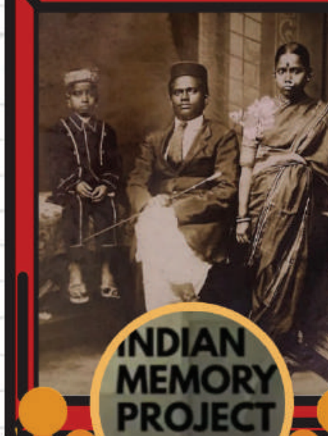

मिज़ियो कैमरा, गुरुग्राम

फ़ोटोग्राफ़र और आर्काइविस्ट आदित्य आर्य के व्यक्तिगत संग्रह के रूप में जो शुरु हुआ था, वह आज फ़ोटोग्राफ़िक उपकरणों का एक संग्रहालय है, जो 200 से अधिक वर्षों की फ़ोटोग्राफ़ी के माइलस्टोंस को जीवंत करता है। संग्रहालय में 100 से अधिक देशों के 2,500 से अधिक एंटीक कैमरों को प्रदर्शित किया गया है, जिसमें दुनिया का सबसे नन्हा कैमरा, सबसे पुराना (1870 के दशक का), सबसे पहला फ़्लैश उपकरण, फ़ोटोग्राफ़िक फ़िल्में, लेंस, एनलार्जर और लाइट मीटर शामिल हैं। फ़ोटोग्राफ़ी की दुनिया के कई पुराने विज्ञापन और फ़ोटोग्राफ़ी से जुड़ी अन्य वस्तुएँ भी प्रदर्शित हैं। संग्रहालय के फ़ोटो आर्काइव में ऐतिहासिक और सामाजिक रुचि की कई तस्वीरें शामिल हैं।

म्यूज़ियम ऑफ़ पॉसिबिलिटीज़, चेन्नई

यह संग्रहालय निर्मित स्थान में सार्वभौमिक एक्सेसिबिलिटी मानकों को प्रदर्शित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। दिव्यांगजनों के लिए जीवन के सभी क्षेत्रों में सहायक प्रौद्योगिकी को प्रदर्शित करने और मज़बूत करने के लिए इसकी परिकल्पना की गई है। सम्पूर्ण स्थान को एक इंटरैक्टिव अनुभवात्मक स्थान के रूप में डिज़ाइन किया गया है, जहाँ आगन्तुक सुलभ समाधानों को आज़मा सकते हैं और तय कर सकते हैं कि उनकी आवश्यकताओं के लिए कौन सा सबसे अच्छा है। वे संग्रहालय के साथ प्रॉब्लम स्टेटमेंट्स भी साझा कर सकते हैं, जो बाद में शोधकर्ताओं और नवप्रवर्तनकर्ताओं को भेजे जाते हैं, ताकि ऐसे और उत्पाद विकसित होते रहें। संग्रहालय बड़े पैमाने पर निर्माण के लिए सम्भावित उत्पादों की पहचान करने के लिए विक्रेताओं और निर्माताओं के लिए एक स्थान भी प्रदान करता है।

छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय, मुम्बई

भारत में प्रमुख कला और इतिहास संग्रहालयों में से एक, CSMVS में विभिन्न सामग्रीयों और तकनीकों की 70,000 ऐतिहासिक और कलात्मक वस्तुओं का संग्रह है। ये वस्तुएँ पाषाण युग से लेकर समकालीन समय तक मानव जाति के इतिहास को दर्शाती हैं। संग्रहालय में भारतीय मूर्तियों, चित्रों, धातु और सजावटी कला से लेकर आभूषण, वस्त्र और परिधान, मुद्रा, प्राकृतिक इतिहास पर बहुत सी दीर्घाएँ हैं और साथ ही बच्चों के लिए एक अलग संग्रहालय भी है। CSMVS ने विरासत के संरक्षण के क्षेत्र में मिसाल कायम करके एक बड़ा योगदान दिया है। 2018 में संग्रहालय को UNESCO द्वारा विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया था।

इंडियन मेमोरी प्रोजेक्ट

एक प्रकार का ऑनलाइन संग्रहालय, यह प्रोजेक्ट एक विज़ुअल और कथा-आधारित ऑनलाइन संग्रह है, जो भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास और उसमें रहने वाले लोगों को उनके व्यक्तिगत अभिलेखागार में पाई गई तस्वीरों (और कभी-कभी पत्रों) के माध्यम से उजागर करता है। कथाओं के सन्दर्भ के साथ यह तस्वीरें दुनिया भर से संग्रह में योगदान देती हैं। साक्ष्य के रूप में व्यक्तिगत छवियों के साथ, संग्रह पर प्रत्येक पोस्ट उपमहाद्वीप के लोगों, आगन्तुकों, परिवारों और पूर्वजों, संस्कृतियों, जीवन शैली, परम्पराओं, विकल्पों, परिस्थितियों और इसके परिणामस्वरूप परिणामों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रकट करती है। भारत के विभाजन की भयावहता से जुड़ी यादों को भी सामने लाने की कोशिश की गई है।

आदित्य आर्य
प्रख्यात फोटोग्राफर और मिज़ियो कैमरा के संस्थापक

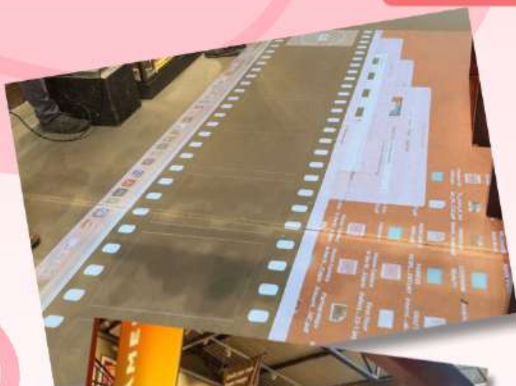

"मिज़ियो कैमरा 1860 से अब तक के हज़ारों कैमरे दर्शाते हुए फ़ोटोग्राफी का इतिहास बताता है। मेरा यह 30-40 साल पुराना शौक था। मैं फ़ोटोग्राफर था और हिस्ट्री का स्टूडेंट भी था तो हिस्ट्री ऑफ़ फ़ोटोग्राफी में बहुत रूचि थी। देखते-देखते ये कलेक्शन बन गया। यहाँ का हर एक कैमरा दुर्लभ है — जैसे आप K-20 देखेंगे, जिससे एटम बम के मशरुम क्लाउड की फ़ोटो ली गई थी या एक 1900 का पोर्ट्रेट कैमरा। मेरा मानना है कि अगर ये सब कैमेरे बोलने लग जाएँ और अपनी कहानी सुनाने लग जाएँ तो आप पाएँगे कि इन कैमरों ने बहुत देखा है। इन्होंने इतिहास देखा है। हिस्ट्री इनके माध्यम से कैच की गई है। मिज़ियो कैमरा में देश-विदेश के बहुत लोग आते हैं। रविवार को यह तादाद 300-500 की होती है। हज़ारों की तादात में दूर-दूर के विद्यालयों के बच्चे यहाँ आते हैं, साथ ही हम हमेशा कुछ-न-कुछ नया करने की कोशिश करते रहते हैं। जैसे कि अभी हम एट्रियम के अंदर फ्लोर पर प्रोजेक्शन बनाने की कोशिश कर रहे हैं। यह गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री ने अपने 101वें 'मन की बात' में गुरुग्राम म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के सहयोग से बनाए गए प्रतिष्ठित मिज़ियो कैमरा का उल्लेख किया।"

"2010 में स्थापित, इंडियन मेमोरी प्रोजेक्ट दुनिया का पहला दृश्य और कथा-आधारित ऑनलाइन संग्रह है। क्रॉस-रेफरेंस आर्काइव भारतीय उपमहाद्वीप के एक व्यक्तिगत इतिहास का पारिवारिक तस्वीरों और दुनिया भर से योगदान किए गए आकर्षक व्यक्तिगत आख्यानों के माध्यम से पता लगाता है, जो उपमहाद्वीप के साथ अपने या अपने पूर्वजों के जीवन के माध्यम से गहरा सम्बन्ध साझा करते हैं। व्यक्तिगत और सामूहिक इतिहास को साझा करने के साथ-साथ दस्तावेज़ के वैकल्पिक तरीके का नेतृत्व करते हुए, इंडियन मेमोरी प्रोजेक्ट ने अंतरराष्ट्रीय पाठ्यक्रम के भीतर एक ग्राउंड-ब्रेकिंग डिस्कोर्स बनाया है और एक उदाहरण के रूप में कई देशों को समान संग्रह बनाने के लिए प्रेरित किया है। इंडियन मेमोरी प्रोजेक्ट भारत सरकार का बहुत आभारी है, जिसने देश, महाद्वीप और दुनिया पर इसके प्रयासों और प्रभाव को मान दिया और इसकी सराहना की। यह परियोजना उन हज़ारों लोगों की भी आभारी है, जिन्होंने उपमहाद्वीप की सुंदर और जटिल कहानी के एक सम्मानित संरक्षक के रूप में 13 वर्षों तक इसकी सराहना की है। यह लोगों की सामूहिक विरासत है।"

"MY FAMILY MADE THE PEN THAT WROTE THE CONSTITUTION OF INDIA"

LEAVING EVERYTHING BEHIND IN SCOTLAND TO AN UNKNOWN FUTURE IN INDIA

अनुषा
संस्थापक, इंडियन मेमोरी प्रोजेक्ट

आधुनिक भारत के निर्माताओं को सम्मान

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में भारत में बन रहे नए प्रकार के संग्रहालयों और स्मारकों के बारे में बात की, जो भारत की विकास गाथा में हमारे स्वतंत्रता सेनानियों, नेताओं और सैनिकों के योगदान को प्रदर्शित करते हैं। आइए एक नज़र डालते हैं।

जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के संग्रहालय

जनजातीय मामलों का मंत्रालय देश भर में 10 ऐसे संग्रहालय विकसित कर रहा है जो स्वतंत्रता संग्राम में भारत के जनजातीय लोगों के योगदान को समर्पित हैं। ये संग्रहालय यह प्रदर्शित करेंगे कि कैसे देश की जैविक और सांस्कृतिक विविधता के लिए जनजातियों द्वारा किए गए संघर्षों ने राष्ट्र निर्माण में मदद की।

प्रधानमंत्री संग्रहालय

नई दिल्ली में प्रधानमंत्री संग्रहालय आज़ादी के बाद से भारत के प्रत्येक प्रधानमंत्री के लिए एक सम्मान है और पिछले 75 वर्षों में हमारे देश के विकास में उन्होंने कैसे अपना योगदान दिया है, इसका एक वर्णनात्मक रिकॉर्ड है। यह सामूहिक प्रयास का इतिहास है और भारत के लोकतंत्र की रचनात्मक सफलता का शक्तिशाली प्रमाण है।

बिप्लबी भारत गैलरी

कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में स्थित यह गैलरी भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में रेवोल्यूशनरीज़ के योगदान और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के लिए उनके सशस्त्र प्रतिरोध को प्रदर्शित करती है। 23 मार्च, 2022 को शहीद दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री द्वारा इसका उद्घाटन किया गया था। यह गैलरी इंडियन नेशनल आर्मी के गठन और नौसेना विद्रोह के योगदान को भी प्रदर्शित करती है।

राष्ट्रीय नमक सत्याग्रह स्मारक

गुजरात के दांडी में स्थित इस स्मारक की कल्पना महात्मा गाँधी के नेतृत्व में 1930 के दांडी मार्च की भावना और ऊर्जा को पुनर्जीवित करने वाली एक अनुभवात्मक यात्रा के रूप में की गई है। आगंतुकों को स्मारक में चरण-दर-चरण निर्देशित किया जाता है ताकि वे दांडी मार्च और सत्याग्रह के दृष्टिकोण और तत्कालीन इतिहास की कल्पना कर सकें एवं उसे समझ सकें।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी संग्रहालय

केवड़िया, गुजरात में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में स्थित संग्रहालय, भारत के लौह पुरुष, सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन और कार्यों के लिए एक श्रद्धांजलि है, जिसमें विस्मयकारी लार्जर-दैन-लाइफ़ म्यूरल्स और आकर्षक डिजिटल प्रस्तुति के साथ एक प्रभावशाली कथा बुनी गई है। संग्रहालय स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी के बनने की कहानी भी बताता है।

राष्ट्रीय समर स्मारक

इंडिया गेट परिसर में यह स्मारक भारतीय सशस्त्र बलों के उन सैनिकों को सम्मान और याद करने के लिए बनाया गया है, जिन्होंने आज़ादी के बाद देश की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक उन सैनिकों को भी याद करता है, जिन्होंने शांति अभियानों और काउंटर इंसर्जेंसी ऑपरेशंस में भाग लिया और सर्वोच्च बलिदान दिया।

राष्ट्रीय पुलिस स्मारक

राष्ट्रीय पुलिस स्मारक सभी सीपीओ/सीएपीएफ/राज्य पुलिस के उन पुलिस कर्मियों को सम्मानित करता है, जिन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपना बलिदान दिया, चाहे वह कानून और व्यवस्था बनाए रखते हुए हो, आतंकवाद, उग्रवाद और अपराध के खिलाफ लड़ना हो, राष्ट्रीय सम्पत्तियों की रक्षा करते हुए हो, आपदाओं का मुकाबला करते हुए हो या अन्य आपात स्थिति हो। नई दिल्ली में संग्रहालय, पुलिस द्वारा निभाई जाने वाली विविध भूमिकाओं पर ध्यान केन्द्रित करने के अलावा, भारत में पुलिस के इतिहास और विकास पर भी प्रकाश डालता है।

जलियाँवाला बाग़ स्मारक

यह स्मारक उन लोगों के लिए एक श्रद्धांजलि है, जिन्होंने 1919 के जलियाँवाला बाग नरसंहार में अपनी जान गँवाई थी। स्मारक के नवीनीकरण के पश्चात् परिसर में अब चार संग्रहालय दीर्घाएँ हैं (अनावश्यक और कम उपयोग वाली इमारतों के अनुकूल पुन: उपयोग के माध्यम से बनाई गई), ऑडियो-विज़ुअल तकनीक का फ्यूज़न किया गया है, प्रोजेक्शन मैपिंग और 3D रिप्रज़ेंटेशन के साथ-साथ कई स्कल्पचर्स भी बनाए गए हैं। 13 अप्रैल, 1919 को घटी घटनाओं को प्रदर्शित करने के लिए एक साउंड एंड लाइट शो का इंतज़ाम भी किया गया है।

राष्ट्रीय संग्रहालय विरासत और शिक्षा का केंद्र

डॉ. बी.आर. मणि
महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

भारत में हाल के वर्षों में तेज़ी से संग्रहालय संस्कृति का विकास हुआ है जो हमारे देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को समझने और उसका आनंद लेने के लिए एक स्वागत योग्य पहल है। पहले, संग्रहालयों को बड़े पैमाने पर विद्वानों और शोधकर्ताओं के लिए शैक्षणिक ज्ञान को बढ़ाने के स्थानों के रूप में देखा जाता था, जो प्रदर्शित वर्गीकृत कार्यों के दस्तावेज़ीकरण, व्याख्या और प्रकाशन सम्बन्धी अध्ययन में शामिल थे। परंतु अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में, आम जनता और विद्यार्थियों के बीच संग्रहालयों के प्रति रुचि बढ़ रही है, जो भारत के समृद्ध इतिहास, संस्कृति और कला के प्रति बढ़ती जागरूकता, पर्यटन के बढ़ते महत्त्व और शैक्षिक तथा सांस्कृतिक संस्थानों के रूप में संग्रहालयों को बढ़ावा देने के सरकार के प्रयासों का सकारात्मक परिणाम है।

नई दिल्ली में राष्ट्रीय संग्रहालय, देश का एक ऐसा अग्रणी संस्थान है जो देश के प्रत्येक हिस्से और विदेशों के कुछ देशों की सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करने वाली कला और पुरातत्व की 2,10,000 से अधिक वस्तुओं के लिए विश्व प्रसिद्ध है। भारतीय वस्तुएँ मूर्तियों, पुरातत्व वस्तुओं, कांस्य, टेराकोटा तथा लकड़ी से बनी वस्तुओं के संग्रह, लघु चित्रों, पांडुलिपियों, सिक्कों, शिलालेखों, हथियारों तथा कवच, आभूषणों, वस्त्रों तथा वेशभूषा और मानवशास्त्रीय वस्तुओं के संग्रह के माध्यम से 8,000 वर्षों की भारतीय कला और शिल्प कौशल की कहानी कहती हैं। संग्रहालय में मध्य एशिया और पूर्व-कोलंबियाई कलाकृतियों से पुरावशेष, दो गैर-भारतीय संग्रह हैं। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा खुदाई की गई वस्तुओं सहित सिंधु-सरस्वती सभ्यता की वस्तुएँ प्रतिष्ठित संग्रह हैं जो अन्य वस्तुओं के अलावा भारत और विदेशों से बड़ी संख्या में आगंतुकों को आकर्षित करती हैं।

संग्रहालय लगातार अपनी दीर्घाओं को विकसित करता है और आगंतुकों को नए संग्रह प्रस्तुत करता है। तथापि कुछ प्रमुख दीर्घाएँ और उनके संग्रह हमेशा प्रदर्शित किए जाते हैं। क्यूरेटरों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और आगंतुकों को नई सामग्री दिखाने के लिए, 2017 में यह निर्णय लिया गया कि इन-हाउस प्रदर्शनियों की एक शृंखला शुरू की जाए, जिसका शीर्षक है- 'फ्रॉम आवर रिज़र्व...'। इसमें संग्रहालय के आरक्षित संग्रह में कम संख्या में वे महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ हैं जिनकी ओर आम तौर पर किसी का ध्यान नहीं जाता। इन्हें लगभग एक महीने के लिए

प्रदर्शित किया जाता है, जो संग्रहालय के नियमित आगंतुकों को हर बार कुछ नया देखने का अवसर देती हैं।

यह बड़े गर्व की बात है कि तस्करी कर अवैध रूप से देश से बाहर ले जाई गईं, बड़ी संख्या में मूर्तियों सहित हमारी सैकड़ों कलाकृतियों को प्रधानमंत्री मोदी के ईमानदार और निरंतर प्रयासों से पिछले कुछ वर्षों में वापस लाया गया है। इनमें से कुछ को राष्ट्रीय संग्रहालय में प्रदर्शित भी किया गया है।

राष्ट्रीय संग्रहालय, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय का अधीनस्थ कार्यालय है, जो भारतीय आगंतुकों को उनकी प्राचीन संस्कृति और पहचान के प्रति गर्व की भावना का अनुभव कराता है और विदेशी आगंतुक भारत की संस्कृति और उसके मूल्यों की सराहना करते हैं। यह भारतीय और विदेशी संस्थानों से विशेष प्रदर्शनियों का आयोजन भी करता है और विदेशों में प्रदर्शनियों को भेजने के लिए नोडल एजेंसी के रूप में काम करता है। संग्रहालय अपनी वस्तुओं के डिजिटलीकरण की प्रक्रिया में है। RFID टैग के लिए वस्तुओं को चिह्नित कर रहा है, दिव्यांग व्यक्तियों के लिए स्पर्श अनुभव को क्रियान्वित करने के लिए पूर्ण प्रयास कर रहा है और दिल्ली में मेट्रो स्टेशनों पर कला प्रवेश द्वार खोल रहा है। इसके अलावा प्रख्यात विद्वानों द्वारा महत्त्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान शृंखला, सम्मेलन तथा संगोष्ठी, विभिन्न आयु समूहों विशेष रूप से समाज के कमज़ोर वर्गों के स्कूली बच्चों के लिए विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम, वार्षिक 'प्लेटाइम ऐट नेशनल म्यूज़ियम', गर्मी और सर्दियों की छुट्टियों के दौरान भारतीय और विदेशी छात्रों के लिए इंटर्नशिप, अन्य संग्रहालयों के पेशेवरों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम, आगंतुकों के लिए स्वयंसेवी गाइड कार्यक्रम (90 मिनट का मुफ़्त निर्देशित दौरा), कला वस्तुओं का संरक्षण और इसी तरह की सम्बन्धित गतिविधियाँ आयोजित करता है। संग्रहालय ने महत्त्वपूर्ण वस्तुओं का विवरण देते हुए डिजिटल दीवारों की शुरुआत की है और अजंता की गुफाओं की खोज के 200 वर्ष पूरे होने के अवसर पर, वर्चुअल एक्सपीरिएंशियल म्यूज़ियम (गैलरी) ऑफ़ अजंता (VEMA) को 2018 में आगंतुकों के व्यापक अनुभव के लिए बनाया गया था।

तकनीकी विकास के अनुरूप और संग्रहालयों में लागू किए गए अभिनव विचार निश्चित रूप से आगंतुकों, विशेष रूप से युवा पीढ़ी को विरासत के करीब लाने और अधिक रुचि पैदा करने वाले हैं जो आगंतुकों की संख्या को भी बढ़ाएँगे। युवा वर्ग रोज़गार के रास्ते तलाशने के लिए भी आकर्षित हो सकते हैं। संग्रहालय बच्चों और वयस्कों के लिए समान रूप से एक मूल्यवान शैक्षिक संसाधन भी प्रदान करते हैं और इस प्रकार विरासत के प्रति अपनाए गए हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तनकारी बदलाव इसे संरक्षित करने और बढ़ावा देने की हमारी परिकल्पना में परिलक्षित होता है।

जल संरक्षण

भारत के युवाओं के हाथ में समाधान का नेतृत्व

> “बिन पानी सब सून। बिना पानी जीवन पर संकट तो रहता ही है, व्यक्ति और देश का विकास भी ठप्प पड़ जाता है। भविष्य की इसी चुनौती को देखते हुए आज देश के कई युवा ऐसे भी हैं, जो समाज को जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने के मिशन में भी लगे हुए हैं।”
>
> -प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
> (‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

> “मेरा स्पष्ट मानना है कि सरल माध्यमों जैसे रेडियो से प्रधानमंत्री की ‘मन की बात’ काम की बात तो है ही, पर ये देश-दुनिया के जन-जन के ‘मन की बात’ भी है। प्रधानमंत्री की ये ही कार्य शैली उन्हें लोगों से जोड़ कर भी रखती है और प्रभावी लोक नेतृत्व का अधिकारी भी बनाती है।”
>
> **-अनिल प्रकाश जोशी**
> पर्यावरणविद्

पानी की कमी पूरी दुनिया में एक प्रमुख चुनौती है और भारत भी इसका अपवाद नहीं है। आबादी बढ़ने के साथ-साथ उद्योगों का विस्तार होता है और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव बढ़ता है। इससे पानी की माँग तेज़ी से बढ़ रही है। हालाँकि इस परिदृश्य के बीच भारत के युवा एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरे हैं, जो एक स्टेनेबल भविष्य के लिए इस बहुमूल्य संसाधन को संरक्षित करने का नेतृत्व कर रहे हैं।

भारत के युवाओं ने जल संरक्षण में अपनी भूमिका को अटूट उत्साह और दृढ़ संकल्प के साथ अपनाया है। वे पानी की हर बूँद के महत्त्व को समझते हैं और सक्रिय रूप से अपने समुदायों में जागरूकता पैदा करते हैं। अपनी सक्रिय भागीदारी के माध्यम से, वे दूसरों को पानी बचाने के तौर-तरीकों को अपनाने के लिए शिक्षित और प्रेरित करते हैं और इस बहुमूल्य संसाधन को संरक्षित करने के महत्त्व के बारे में समझाते हैं।

पानी को एक दुर्लभ और मूल्यवान संसाधन के रूप में पहचानते हुए, देश भर के समुदायों ने भी जल संरक्षण की पहल में हाथ मिलाया है। उन्होंने सामूहिक रूप से कार्य करने की आवश्यकता को महसूस किया है और स्थायी जल प्रबन्धन की दिशा में सक्रिय कदम उठाए

हैं। पिछले नौ वर्षों में सरकार ने विभिन्न जागरूकता अभियानों, सफाई अभियान, शैक्षिक कार्यक्रमों और कार्यशालाओं के आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन पहलों का उद्देश्य पानी बचाने के तौर-तरीकों को बढ़ावा देना और समाज के हर वर्ग में जल संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी की भावना पैदा करना है।

इन प्रयासों का प्रभाव स्पष्ट है, क्योंकि नागरिकों, विशेष रूप से युवाओं ने पूरे दिल से इसके प्रति अपनी रुचि दर्शाई है। वे जल प्रबन्धन और वर्षा जल संचयन पर केन्द्रित नवीन स्टार्ट-अप, संगठनों और सामुदायिक नेतृत्व वाली परियोजनाओं के साथ आगे आए हैं। ये सामूहिक प्रयास वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए जल संसाधनों की सुरक्षा में युवाओं और समुदायों के दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

भारत के नागरिकों की सामूहिक शक्ति का लाभ उठाने के लिए सरकार ने विभिन्न पहलें शुरू की हैं। जल शक्ति अभियान (जेएसए) सक्रिय सामुदायिक भागीदारी के साथ जल संरक्षण और प्रबन्धन के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। जेएसए के तहत 'कैच द रेन' अभियान के माध्यम से राज्यों में वर्षा जल संचयन को गति मिली है। ‘मिशन अमृत सरोवर’ के तहत 15 अगस्त, 2023 तक 50,000 जल निकायों को पुनर्जीवित करने का लक्ष्य पहले ही पार कर लिया गया है। नागरिकों, विशेष रूप से युवाओं की सक्रिय भागीदारी के कारण यह सम्भव हो पाया है, जिन्होंने इस मील के पत्थर को निर्धारित समय से पहले हासिल करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, सरकार व्यवहार परिवर्तन और नागरिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से ज़मीनी स्तर पर बदलाव ला रही है। ‘पर ड्रॉप मोर क्रॉप’ जैसी पहल कृषि में जल दक्षता को बढ़ाती है, जबकि ‘अटल भूजल योजना’ जल संकट वाले क्षेत्रों में समुदाय-आधारित भूजल प्रबन्धन को बढ़ावा देती है। स्वच्छ भारत मिशन बेहतर स्वच्छता सुविधाओं और अपशिष्ट जल प्रबन्धन के साथ जल प्रदूषण से निपटता है। इन

लक्षित पहलों में नागरिकों को सक्रिय रूप से शामिल किया गया है, जिसका लक्ष्य स्थायी जल प्रबन्धन है।

इसके अलावा, सरकार ने जल संसाधन प्रबन्धन में उल्लेखनीय योगदान की सराहना करने और प्रेरित करने के लिए 2018 में राष्ट्रीय जल पुरस्कार की शुरुआत की। ये प्रतिष्ठित पुरस्कार राज्यों, व्यक्तियों और संगठनों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए सम्मानित करते हैं और जल संरक्षण में सक्रिय रूप से संलग्न होने और ज़मीनी स्तर पर बदलाव लाने के लिए स्टार्ट-अप और स्थापित संस्थाओं के लिए एक मंच के रूप में कार्य करते हैं। सरकार की पहल ने जल संरक्षण में युवाओं की भागीदारी का मार्ग प्रशस्त किया है। युवाओं के नेतृत्व वाले स्टार्ट-अप, संगठन और गैर-सरकारी संगठन प्रौद्योगिकी, कार्यशालाओं, जागरूकता अभियानों और व्यावहारिक समाधानों के माध्यम से समुदायों को सशक्त बना रहे हैं। इनका प्रभाव शहरी और ग्रामीण, दोनों क्षेत्रों तक फैला हुआ है, जैसा कि उत्तर प्रदेश के पटवई गाँव में पहले अमृत सरोवर के निर्माण में देखा गया, जहाँ स्कूली बच्चों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत को आगे ले जाने के लिए नागरिकों, विशेषकर युवाओं द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रयासों की सराहना करने के लिए खुद प्रधानमंत्री ने हमेशा अपनी आवाज़ का इस्तेमाल किया है। हाल ही में अपने 'मन की बात' सम्बोधन के दौरान, उन्होंने विभिन्न युवाओं के नेतृत्व वाले स्टार्ट-अप्स द्वारा किए जा रहे सराहनीय कार्यों पर प्रकाश डाला। FluxGen, एक स्टार्टअप है, जो लोगों को

पानी के प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए पानी के उपयोग के अपने पैटर्न की पहचान करने में मदद करने के लिए इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स के माध्यम से जल प्रबन्धन सम्बन्धी विकल्प प्रदान करता है; LivNSense, एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग-आधारित प्लेटफॉर्म है, जो पानी के प्रभावी वितरण में मदद करता है और जलकुम्भी से कागज़ बनाने का काम

कर रहा स्टार्ट-अप 'कुम्भी कागज़' ऐसी ही कुछ प्रेरणादायक कहानियाँ हैं, जिन्हें प्रधानमंत्री ने साझा किया। इसके अलावा प्रधानमंत्री ने छत्तीसगढ़ और झारखंड राज्य में युवाओं द्वारा जल संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करने और सिंचाई के लिए इस्तेमाल किए जा सकने वाले पानी को संरक्षित करने के लिए चेक डैम बनाने के लिए किए जा रहे प्रयासों पर भी प्रकाश डाला।

आज, जब भारत मिशन LiFE के माध्यम से पर्यावरण के लिए जीवन-शैली के बारे में पूरी दुनिया का मार्गदर्शन कर रहा है, अपना देश जलवायु के अनुकूल क्रियाकलाप के मामले में एक अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तैयार है। सरकार और राष्ट्र के नागरिकों, विशेषकर युवाओं के सामूहिक प्रयासों के कारण भारत का वॉटर-सफ़ीशिएंट, या यहाँ तक कि 'वॉटर-सरप्लस नेशन' बनना निश्चित है। हम मिलकर एक जल-सुरक्षित और समृद्ध भविष्य का भारत बना रहे हैं, जहाँ हर बूँद को महत्त्व दिया जाता है और आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जाता है।

प्रधानमंत्री मोदी का विज़न : प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत का समर्पण

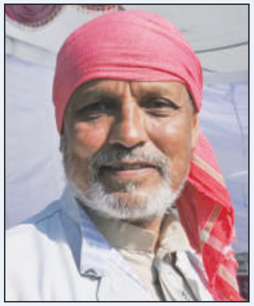

अनिल प्रकाश जोशी
पर्यावरणविद्

प्रकृति ही विश्व का सबसे बड़ा सत्य है और इससे उत्पन्न संसाधनों से ही जीवन पनपता है। दुनिया में भारत इसीलिए अलग स्थान रखता रहा है कि प्रकृति और पर्यावरण के प्रति समर्पण, संरक्षण के भाव शुरुआत से ही यहाँ के संस्कारों का हिस्सा रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी की इस ओर मूल समझने देश को प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण के प्रति एक नई दिशा दी है। आज प्रकृति के सभी संसाधनों से जुड़े हुए तत्वों के प्रति नेतृत्व की गम्भीरता इस बात का सबसे बड़ा सूचक है कि जहाँ एक तरफ़ देश आर्थिक रूप से दुनिया से लोहा मनवा चुका है, वहीं दूसरी तरफ़ पारिस्थितिकी के प्रति भी संवेदनशीलता दिखाई देती है। यह संकेत स्वच्छ भारत, जल प्रथम व मिट्टी स्वास्थ्य जैसे कार्यक्रमों को देश में एक आन्दोलन के रूप में खड़ा करना प्रधानमंत्री मोदी की प्रकृति के प्रति समर्पण ही नहीं, बल्कि उनकी प्रभावी कार्यशैली की ओर इशारा करता है। प्रकृति के संसाधनों को अगर सब भोगते हों तो सबकी भागीदारी जुटाना महत्त्वपूर्ण होता है, जो आन्दोलनों से ही सम्भव है।

पिछले 9 सालों में प्रकृति के प्रति दायित्व सरकार की योजनाओं में झलकता रहा है। शुरुआत में ही स्वच्छ भारत का नारा देश की गरिमा से जुड़ी पहल थी। जल संरक्षण को लेकर अमृत सरोवर व 'कैच द रैन' जैसी योजनाएँ सीधे घर-गाँवों से जुड़ गईं। आज ये सब आन्दोलन का रूप ले चुकी हैं। इसने जहाँ पहाड़ी धाराओं की वापसी तय

की, वही वर्षा-जनित छोटी नदियों को पुनर्जीवन दिया। महत्त्वपूर्ण बात ये है कि ऐसे प्रयत्न फिर स्वतः ही सरकार से समाज के हो जाते हैं। प्रधानमंत्री के स्वभाव में प्रकृति के व्यवहार को समझने की विशेषता है और ये ही कारण है कि देश की पारिस्थितिकी योजनाएँ प्रभावी हुईं। उदाहरण के लिए देश जहाँ मात्र 10 से 15 प्रतिशत ही वर्षा के पानी को प्राकृतिक रूप में जुटाता था, आज वर्षा जल संरक्षण की पहल से ये प्रतिशत दो गुना अवश्य हुआ है, क्योंकि हमारे पास आर्थिक विकास के समांतर पर्यावरणीय बढ़त दर का कोई सूचक नहीं है वर्ना हमारी जीडीपी के साथ जीइपी (ग्रास एनविरिमेंटल प्रोडक्ट) भी दमदार दिखाई देते, जो यह दर्शा देते कि देश हवा, मिट्टी, पानी तथा वनों, पर्यावरण के चार मूल स्तम्भों को लेकर भी दम भर सकता है। दुनिया में ऐसी नई पहल का जज़्बा प्रधानमंत्री के ही बूते की बात है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रधानमंत्री की विभिन्न पहलों ने राष्ट्र से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पकड़ बनाई है, चाहे वो सरल जीवनशैली से जुड़ी हो या फिर सबको एक पृथ्वी और एक परिवार के रूप में मानना हो या दुनिया में सूर्य को भविष्य की ऊर्जा का मुख्य स्रोत मनवाना हो। इस तरह की योजनाएँ सब पर सीधा प्रभाव डालती हैं और यही कारण है कि आज देश के हर कोने में महिलाएँ हों और चाहे पुरुष

और खास तौर से युवा इन प्रयासों को विभिन्न रूपों में कहीं ज़मीन पर उतार रहे हैं।

आज देशभर में जल संचय के कार्य शायद इसी आन्दोलन का प्रताप हैं, वहीं दूसरी तरफ़ देश में मिट्टी के बिगड़ते स्वास्थ्य को बेहतर करने के लिए उसे जैविक बनाने का काम हुआ। इसी कड़ी में अन्य योजनाएँ, जो सीधे पर्यावरण को प्रभावित करती हैं, वे आज कहीं खरी उतरती दिखाई देती हैं। देश के युवाओं ने इनको कई रूपों में अपनाया है। दक्षिण हो या उत्तर भारत, आज स्थानीय लोगों की भागीदारी स्पष्ट है। आईटी सेक्टर में स्टार्टअप हो या फिर ज़मीन से जुड़े हुए अन्य कार्य, समाज के हर वर्ग की

भागीदारी परिलक्षित है। युवाओं की पानी प्रबन्धन की फ्लसजेन पहल पर आईटी, आईओटी का सीधा प्रयोग हुआ है। ऐसे ही छत्तीसगढ़ में पानी बचाने का प्रयोग व झारखंड में खूँटी के लोगों का 'पानी जोड़ो अभियान' उदाहरण है। आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लेकर और प्राकृतिक इंटेलिजेंस में हम दमखम के साथ खड़े हैं। घर हो, गाँव हो या राज्य, प्रकृति के व्यवहार को समझने की शुरुआत हुई है। इसी तरह लोकल फॉर वोकल का जादू खूब चला। इससे स्थानीय संसाधनों पर आधारित संरक्षण रोज़गार व पहचान बनी है।

आज हमें यह भी स्वीकार कर चलना होगा कि आर्थिकी और पारिस्थितिकी में संतुलन बना रहना चाहिए ताकि वो एक-दूसरे के विपरीत न हों, बल्कि एक-दूसरे के सहायक सिद्ध हों। प्रधानमंत्री के तमाम वक्तव्यों में, जो उन्होंने राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिए, उनमें ये ही झलक है। अपने देश में आज इसके सुखद परिणाम भी मिले हैं, जो आने वाले दशकों में और भी प्रभावी होंगे। मेरा स्पष्ट मानना है कि सरल माध्यमों, जैसे रेडियो से प्रधानमंत्री की 'मन की बात' काम की बात तो है ही, पर ये देश-दुनिया के जन-जन के 'मन की बात' भी है। प्रधानमंत्री की ये ही कार्य शैली उन्हें लोगों से जोड़कर भी रखती है और प्रभावी लोक नेतृत्व का अधिकारी भी बनाती है।

जल संरक्षण की प्रेरक कहानियाँ

समुदायों को बदल रहे ज़मीनी आन्दोलन

अपने 'मन की बात' कार्यक्रम के दौरान, प्रधानमंत्री ने जल संरक्षण के क्षेत्र में लोगों द्वारा किए जा रहे सराहनीय कार्यों पर प्रकाश डाला। छत्तीसगढ़ के बालोद ज़िले में एक समूह ने पानी बचाने की मुहिम शुरू की है। वे घर-घर जाकर लोगों को पानी के महत्त्व और इसके संरक्षण के बारे में जागरूक करते हैं, वहीं झारखंड के खूँटी ज़िले में पानी बचाने और क्षेत्र में पानी की कमी की समस्या को हल करने के लिए ग्रामवासी एक साथ आकर चेक डैम बना रहे हैं।

दूरदर्शन की टीम ने इन दोनों क्षेत्रों के निवासियों से उनके इस अभियान के बारे में बात की:

"छत्तीसगढ़ के बालोद ज़िले में एक समूह ने पानी बचाने की मुहिम शुरू की है। वे घर-घर जाकर लोगों को पानी के महत्त्व और इसके संरक्षण के बारे में जागरूक करते हैं। जल एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण संसाधन है। सोचिए, अगर आपके पास पानी के अलावा सब कुछ हो तो क्या आप जीवित रह पाएँगे? इसलिए अपने भविष्य को बचाने के लिए हमें पानी की एक-एक बूँद को बचाने की ज़रूरत है। हमें अपने तालाबों, नदियों और अन्य जलस्रोतों को साफ़ रख कर और यह सुनिश्चित कर के पानी किसी प्रकार के हानिकारक रसायनों से दूषित न हो, जल संरक्षण की दिशा में कदम उठाने की ज़रूरत है। मैं माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को हमारे काम की सराहना करने और इस दिशा में और अधिक उत्साह के साथ काम करने के लिए प्रेरित करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। हमारी टीम इस अमूल्य संसाधन की एक-एक बूँद को बचाने के लिए लोगों को शिक्षित करने के लिए और अधिक समर्पित रूप से काम करने के लिए तैयार है।"

वीरेंद्र सिंह, बालोद ज़िला, छत्तीसगढ़

"भगवान बिरसा मुंडा ने 'जल, जंगल, ज़मीन' का नारा दिया। इस नारे में पहला शब्द पानी है। खूँटी ज़िला पानी की कमी वाला क्षेत्र है। लोग यहाँ पानी बचाने के लिए महीनों तक नहीं नहाते हैं। हमने महिलाओं को एक घड़ा पानी लेने के लिए कई किलोमीटर पैदल चलते देखा है। यह सब देखते हुए यहाँ के ग्रामीणों ने चेक डैम बनाने का फ़ैसला किया। ज़िला प्रशासन ने हमारी पहल में हमारा साथ दिया और इस तरह हमने पहला चेक डैम बनाया। अब तक हमने अपने गाँव और आस-पास के इलाकों में बहुत सारे चेक डैम बनाए हैं। ये चेक डैम पानी की कमी की समस्या को कम करने में महत्त्वपूर्ण साबित हुए हैं।

जब प्रधानमंत्री ने खूँटी की बात की, वहाँ के निवासियों और चेक डैम बनाने के उनके प्रयासों की सराहना की, तो हमारी खुशी और उत्साह की आप कल्पना भी नहीं कर सकते। अब, जब प्रधानमंत्री जी ने अपने 'मन की बात' में हमारे प्रयासों की चर्चा की है तो दूसरे गाँव के लोग भी जागरूक हुए हैं और वे भी अपने-अपने क्षेत्र में इस तरह के चेक डैम बनाने का काम करेंगे। हम न केवल हमें, बल्कि अन्य गाँवों को भी प्रेरित करने के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद देना चाहते हैं, जो हमारी कहानी से प्रेरणा लेंगे और पानी की कमी की समस्या को हल करने के लिए इसे लागू करेंगे।"

अजय शर्मा, खूँटी ज़िला, झारखंड

जल संरक्षण में बालोद ज़िले के निवासियों के प्रयासों के बारे में अधिक जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

जल संरक्षण में क्रांति ला रहे भारत के स्टार्ट-अप्स

भारतीय स्टार्ट-अप देश के सामने जल की कमी की चुनौती का समाधान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये अभिनव उद्यम कुशल जल उपयोग को बढ़ावा देने, अपव्यय को कम करने और पानी की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए प्रौद्योगिकी और रचनात्मक समाधानों का लाभ उठा रहे हैं। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' के दौरान कुछ युवाओं के नेतृत्व वाले स्टार्ट-अप के माध्यम से किए जा रहे सराहनीय कार्यों पर प्रकाश डाला, जो जल संरक्षण की दिशा में काम कर रहे हैं।

फ्लक्सजेन सस्टेनेबल टेक्नोलॉजीज, AI और IoT आधारित कम्पनी है, जो उद्योगों को जल सकारात्मक बनाने के लिए सम्पूर्ण जल प्रबन्धन समाधान प्रदान करती है।

"मेरा मानना है कि जिस तरह से प्रधानमंत्री ने भारत में स्टार्ट-अप का समर्थन किया है, वह राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक बहुत ही दूरदर्शी दृष्टिकोण है। यह दो समस्याओं से भी निपटता है, एक तो आने वाले स्टार्ट-अप भारत के लोगों के लिए नई नौकरियाँ पैदा करके बेरोज़गारी की समस्या को हल कर रहे हैं और दूसरा यह कि वे भारत की जीडीपी वृद्धि में भी योगदान दे रहे हैं। आज के भारत में स्टार्ट-अप के रूप में अपने रचनात्मक विचारों को क्रियान्वित करने के अपार अवसर हैं। मैं कामना करता हूँ कि प्रधानमंत्री जी ने जो ईको-सिस्टम बनाया है, उसका सपना देखने वाला हर व्यक्ति पूरा लाभ उठाए। हम इस बात से बहुत उत्साहित हैं कि भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वास्तव में अपने 'मन की बात' में हमारे काम के बारे में उल्लेख किया है। इस उल्लेख के बाद से, हमें देश के विभिन्न कोनों से बहुत सारे फ़ोन आ रहे हैं, जहाँ लोग यह जानना चाहते हैं कि हम क्या करते हैं और कैसे करते हैं। यह हमारे कर्मचारियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत रहा है। इससे हम सभी के बीच अपने ग्राहकों को बेहतर तरीके से सेवा देने और भारत को जल सकारात्मक देश बनाने में योगदान देने की ज़िम्मेदारी की भावना भी बढ़ी है।"

गणेश शंकर

लिवएनसेंस टेक्नोलॉजीज़ प्राइवेट लिमिटेड एक अग्रणी औद्योगिक क्लाइमेट-टेक वेंचर है, जो उद्योगों को सुरक्षा और स्थिरता के भविष्य को चलाने के उद्देश्य से सेवा प्रदान करता है।

अविनाश कुमार

"जल वितरण और रिसाव एक वैश्विक चिन्ता का विषय है, क्योंकि विभिन्न जलवायु और पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए देशों के वैश्विक प्रमुख लगातार काम कर रहे हैं। पानी के रिसाव की इस चुनौती का समाधान करने के लिए, लिवएनसेंस अपने IOT और AI आधारित प्लेटफॉर्म, ग्रीनोप्स के माध्यम से डेटा संचालित रियल-टाइम इनसाइट्स के लिए सम्भावित जल रिसाव के लिए एक अभिनव दृष्टिकोण लेकर आया है। पानी के रिसाव की रीयल-टाइम ट्रैकिंग सेंसर द्वारा की जाती है और एकीकृत 4जी/5जी नेटवर्क के साथ कई एज़ डिवाइसों से डेटा एकत्र किया जाता है और रीयल-टाइम अलर्ट और एनालिटिक्स प्राप्त करने के लिए इसे ग्रीनऑप्स प्लेटफॉर्म में संसाधित किया जाता है, जिससे शुरुआती पहचान और प्लगिंग को सक्षम किया जाता है, जिससे इस प्राकृतिक संसाधन की प्रत्येक बूँद को संरक्षित करने के प्रयास में रिसाव का शीघ्र पता लगाने और उसे बंद करने में सक्षम बनाया जा सके। हमें उम्मीद है कि हमारा योगदान भारत को आत्मनिर्भर बनाने और स्थिरता लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा। मैं प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने हमारे काम की सराहना की और हमें मोटीवेट किया।"

जलकुम्भी, जिसे 'बेंगाल टेरर' और 'जर्मन वीड' के रूप में जाना जाता है, एक परजीवी पौधा है, जो आर्द्रभूमि पारिस्थितिक तंत्र को बाधित करता है और जल निकायों में कमल के फूलों की उपस्थिति में बाधा डालता है। **कुम्भी कागज़** जलकुम्भी को बायोडिग्रेडेबल पेपर में बदलकर इस समस्या का समाधान दे रहा है।

"हमें इंडिया वॉटर पिच-पायलट-स्केल स्टार्ट-अप चैलेंज के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया था। उस चुनौती से हमें जो अनुदान मिला है, उससे हमें मशीन खरीदने में मदद मिली है, जिसके माध्यम से हम यह अनूठा और पर्यावरण के अनुकूल कागज़ बना रहे हैं। हम पूरे भारत में अपने उत्पादन को बढ़ाने का लक्ष्य बना रहे हैं। हाल ही में प्रधानमंत्री ने हमारे संगठन 'कुम्भी कागज़' के बारे में बात की, जिससे हमारा मनोबल बढ़ा है। मैं हमारे काम की सराहना करने के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद देना चाहता हूँ।"

रूपांकर भट्टाचार्य

कुम्भी कागज़ के बारे में अधिक जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान

"हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने हमें 'जय जवान जय किसान' का नारा दिया था। 20 साल पहले हमारे महान प्रधानमंत्री अटल जी ने उसमें 'जय विज्ञान' जोड़ा था; 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान'। मैं 'जय अनुसंधान' जोड़ना चाहता हूँ।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी (भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अपने 106वें सत्र में सम्बोधन)

"जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान और जय अनुसंधान" का नारा भारत की प्रगति और विकास को दर्शाता है। यह देश के सैनिकों, किसानों और वैज्ञानिक प्रगति को सम्मानित करता है। 'जय अनुसंधान' विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रमुखता को प्रदर्शित करते हुए, अनुसंधान और विकास के लिए भारत की प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करता है।

श्रीमन शिवाजी शामराव डोले महाराष्ट्र के नासिक ज़िले के एक छोटे से गाँव के रहने वाले हैं। एक पूर्व सैनिक, उन्होंने अपनी सेवानिवृत्ति के बाद कृषि में डिप्लोमा किया।

पूर्व साथी सैनिकों सहित बीस व्यक्तियों की एक टीम के साथ उन्होंने वेंकटेश्वर को-ऑपरेटिव पावर एंड एग्रो प्रोसेसिंग लिमिटेड की स्थापना की, जिसने कुछ ही समय में महाराष्ट्र और कर्नाटक के कई ज़िलों में अपना प्रभाव बढ़ा लिया।

मालेगाँव, नासिक में 500 एकड़ से अधिक उपजाऊ भूमि पर 18,000 से अधिक व्यक्ति काम करते हैं, जो कृषि खेती के माध्यम से इस भूमि का पालन-पोषण करते हैं और भरपूर फसल की उपज करते हैं।

उन्होंने जैविक खेती, डेयरी उत्पादन को अपनाया और अपने उत्कृष्ट गुणों को दर्शाते हुए अपने अंगूरों का यूरोप में सफलतापूर्वक निर्यात किया। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर उन्होंने परिचालन दक्षता और उत्पादकता को बढ़ाया और निर्यात प्रमाणपत्र की प्राप्ति ने उनकी उत्कृष्टता के प्रयास को मज़बूत किया।

अपने नवीनतम 'मन की बात' सम्बोधन के दौरान, प्रधानमंत्री ने श्रीमान शिवाजी शामराव डोले द्वारा किए गए कार्य की सराहना करते हुए कहा कि वह 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान और जय अनुसंधान' सबका प्रतिबिम्ब हैं।

दूरदर्शन की टीम ने कृषि के क्षेत्र में उनकी अनूठी पहल के बारे में जानने के लिए श्रीमान शिवाजी शामराव डोले से बात की।

"मैं शिवाजी शामराव डोले वेंकटेश्वर कोऑपरेटिव पावर एंड एग्रो प्रोसेसिंग सोसायटी का अध्यक्ष हूँ। यह संस्था भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय के अधीन पंजीकृत है। हमारी सोसायटी दो राज्यों-महाराष्ट्र और कर्नाटक में काम करती है।
हम खेती और अन्य कृषि-सम्बन्धित व्यवसायों में शामिल हैं, जैसे बकरी पालन, मछली पालन, डेयरी फार्मिंग और मोती पालन। इनके साथ-साथ हम कई अन्य फलों की फ़सलें भी उगा रहे हैं, जिन्हें दूसरे देशों में निर्यात किया जाता है। हमारा लक्ष्य युवाओं को हमारे साथ अपने व्यावसायिक उपक्रमों में शामिल कर एक अच्छा जीवन जीने में सक्षम बनाना है। हम अपना व्यवसाय ईमानदारी और सम्मान के साथ कर रहे हैं। इस कोऑपरेटिव के माध्यम से हमने कृषि में छोटे पैमाने के व्यवसाय शुरू किए हैं। इससे व्यक्तियों को अपना व्यवसाय करने की अनुमति मिलेगी और धीरे-धीरे बेरोज़गार व्यक्तियों की संख्या कम हो जाएगी। हमारे प्रधानमंत्री जी का भारत को आत्मनिर्भर बनाने का विज़न तभी पूरा होगा, जब युवा आत्मनिर्भर बनेंगे। एक बार ऐसा हो गया तो यह देश विश्व गुरु बन जाएगा।"

विनायक दामोदर सावरकर : एक 'वीर'

" वीर सावरकर का व्यक्तित्व दृढ़ता और विशालता से समाहित था। स्वतंत्रता आन्दोलन ही नहीं, सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय के लिए भी वीर सावरकर ने जितना कुछ किया, उसे आज भी याद किया जाता है। "

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के सम्बोधन में)

एक स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, लेखक, और राजनीतिक विचारक, वीर सावरकर ने भारत में अस्पृश्यता के खिलाफ़ सबसे शक्तिशाली सामाजिक सुधार आन्दोलनों में से एक की शुरूआत की।

सावरकर ने जातिविहीन भारत की कल्पना करते हुए दलितों सहित सभी हिन्दुओं को मन्दिर में प्रवेश की अनुमति देने के लिए रत्नागिरी जिले में पतित पावन मन्दिर का निर्माण किया।

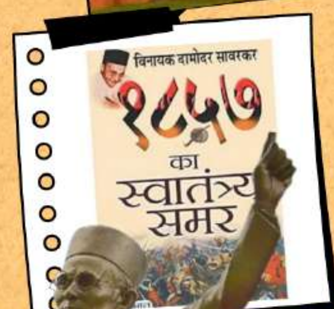

उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई और वे अभिनव भारत सोसायटी और फ्री इंडिया सोसायटी संगठनों से जुड़े थे।

सावरकर ने बड़े पैमाने पर लिखा और भारतीय इतिहास, सामाजिक मुद्दों और हिन्दुत्व के दर्शन पर प्रभावशाली कार्यों का निर्माण किया। उन्होंने समकालीन दस्तावेज़ों और रिपोर्टों के आधार पर मराठी भाषा में एक किताब लिखी, जिसका शीर्षक था, "इंडियन इंडिपेंडेंस समर: 1857"।

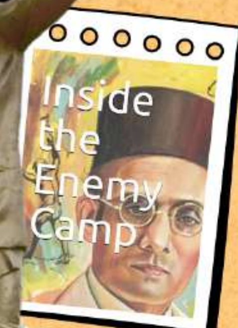

सावरकर ने 1925 में हिन्दू महासभा की स्थापना की।

वीर सावरकर द्वारा उल्लेखित 'सात स्वदेशी बेड़ियाँ'

सावरकर ने समाज को विभाजित करने वाले सामाजिक कारकों की निन्दा की। वह एकता और सामाजिक बुराइयों से मुक्ति चाहते थे। वे समावेशी विकास चाहते थे। उन्होंने 'सात स्वदेशी बेड़ियों' के बारे में बात की

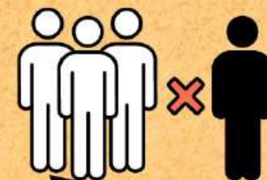

1. कठोर जाति व्यवस्था का उन्मूलन
2. वैदिक साहित्य को जाति की परवाह किए बिना सभी के लिए लोकप्रिय बनाना, जो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए सभ्यतागत ज्ञान था

3. जाति-आधारित व्यावसायिक कठोरता से अलग होना और लोगों को योग्यता और क्षमता के आधार पर अपनी पसंद के व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना

4. वैश्विक गतिशीलता और भारतीयों के लिए विदेशी भूमि में उद्यम करने की आवश्यकता
5. अंतरजातीय भोजन पर वर्जना को तोड़ना

6. अंतरजातीय विवाह को प्रोत्साहन
7. वैज्ञानिक सोच विकसित करने की आवश्यकता

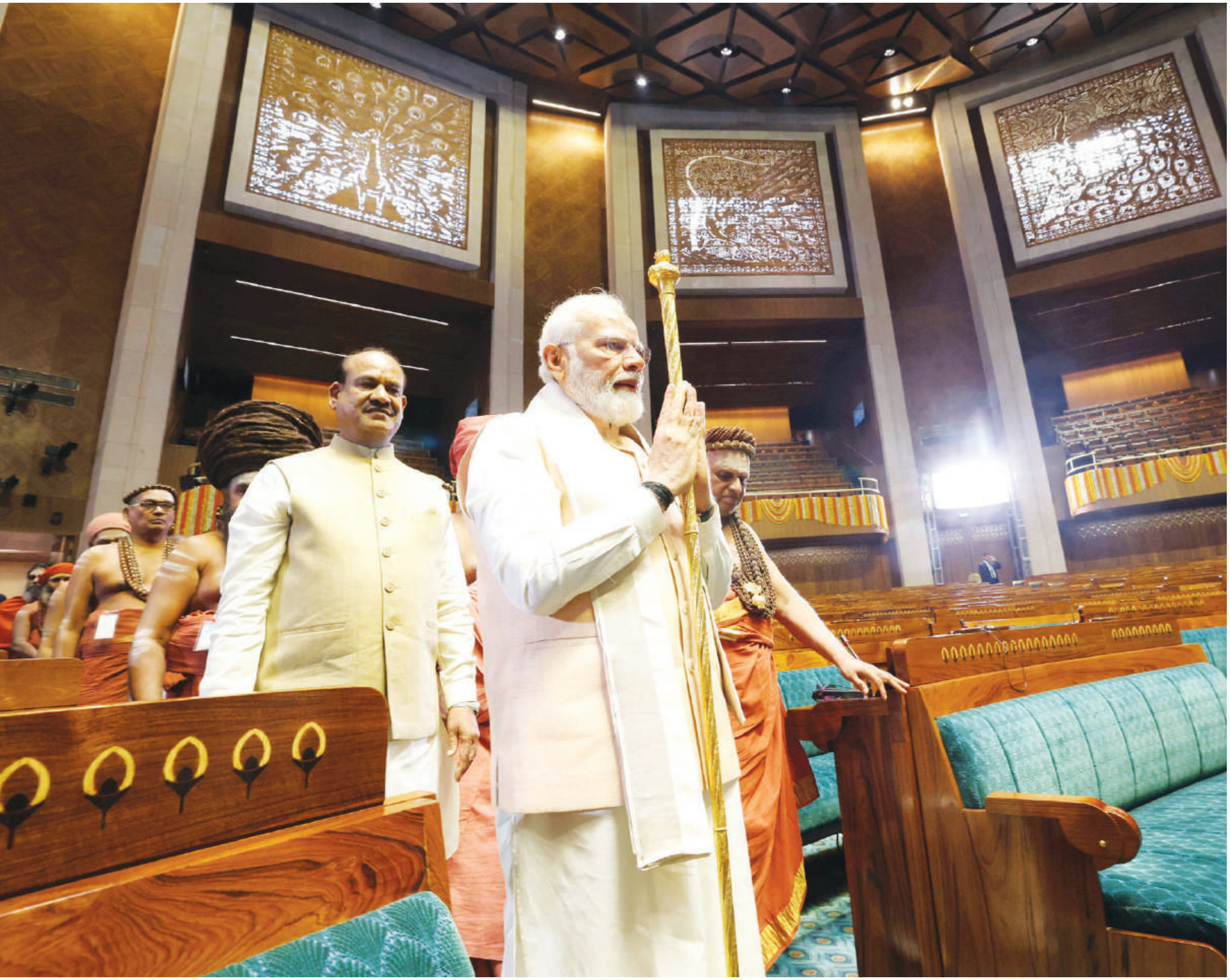

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Ek Bharat Shreshtha Bharat @EBSB_Edumin

Hon'ble PM @narendramodi Ji's candid conversation in #ManKiBaat101 with Yuva Sangam delegates Gyamar Nyokum from #ArunachalPradesh and Vishakha from #Bihar reminiscing special moments from their cultural cum exposure tour under #EkBharatShreshthaBharat

@EduMinOfIndia
@PMOIndia

5:14 PM · May 28, 2023 · 1,158 Views

Aditya Arya @aditya_museo

Proud to share that Hon'ble Prime Minister mentioned the iconic Museo Camera created in collaboration with @MunCorpGurugram in his 101st Mann ki Baat

PMO India and CMO Haryana

12:41 PM · May 28, 2023 · 343 Views

MuseoCamera @museo_camera · May 28

Museo Camera on the 101st episode of Mann Ki Baat by @PMOIndia

Thank you 🙏

@aditya_museo

5 · 11 · 374

Smriti Z Irani @smritiirani

PM @narendramodi जी और बिहार की बेटी विशाखा सिंह जी के बीच "युवा संगम स्कीम" को लेकर हुई वार्ता निश्चित रूप से सुखद है।

यह स्कीम न सिर्फ "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" के संकल्प को सशक्त करने वाला है बल्कि, अन्य युवाओं को इस स्कीम में हिस्सा लेने की प्रेरणा भी देता है। #MannKiBaat

Translate Tweet

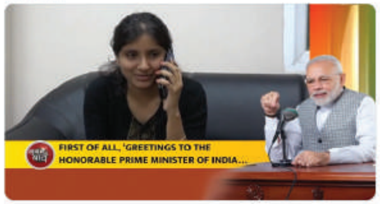

3:26 PM · May 28, 2023 · 26.2K Views

Piyush Goyal @PiyushGoyal

निर्भीक और स्वाभिमानी वीर सावरकर जी को, आज भी याद किया जाता है।

#MannKiBaat

Translate Tweet

12:11 PM · May 28, 2023 · 19.9K Views

Dr Jitendra Singh @DrJitendraSingh

PM Sh @narendramodi recalls his visit to Hiroshima Peace Memorial and Museum. #MannKiBaat

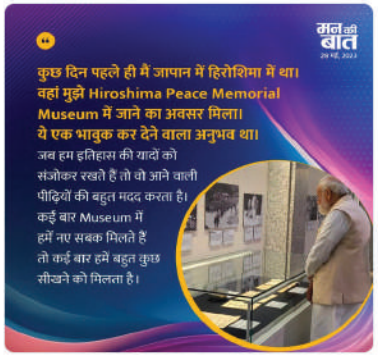

11:19 AM · May 28, 2023 · 927 Views

Yogi Adityanath @myogiadityanath

आज आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी द्वारा @mannkibaat के 101वें एपिसोड में व्यक्त विचार 'नए भारत' के नए संकल्पों को पूर्ण करते हुए अपने विरासतों और संसाधनों को संरक्षित-संवर्धित करने की प्रेरणा देने वाले हैं।

प्रधानमंत्री जी के यशस्वी नेतृत्व में 'आजादी के अमृत काल' को लोक-समृद्धि का अद्वितीय काल बनाने के लिए हम सभी संकल्पित हैं।

Translate Tweet

12:49 PM · May 28, 2023 · 82K Views

Gajendra Singh Shekhawat @gssjodhpur

मोदी जी की दूरदृष्टि से स्वतंत्रता के अमृतकाल में देश के हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाए जा रहे हैं, अब तक 50,000 से ज्यादा अमृत सरोवर बनाए जा चुके हैं।

अमृत सरोवर का निर्माण जीवन के लिए अमृत कलश स्थापना के समान है।

#MannKiBaat

Translate Tweet

Narendra Modi and 3 others

2:54 PM · May 28, 2023 · 3,273 Views

NorthEasternCouncil @NEC_GoI

#MannKiBaat: Inspiring Youth, United for Ek Bharat, Shreshtha Bharat

Gyamar Nyokum, a first-year Mechanical Engineering student from NIT, Arunachal Pradesh shared his inspiring Yuva Sangam experience with the Hon'ble PM Shri @narendramodi ji.

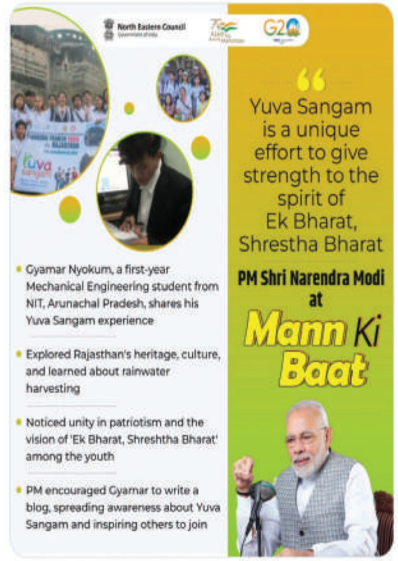

Col Rajyavardhan Rathore @Ra_THORe

21 जून को हम विश्व योगा दिवस मनाएंगे। जिसकी देश-विदेश में तैयारियां चल रही हैं। आप इन तैयारियों के बारे में भी अपने #MannKiBaat मुझे लिखते रहिए।

किसी अन्य विषय पर कोई और जानकारी अगर आपको मिले, तो वो भी मुझे बताइएगा।

- माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

Translate Tweet

MuseoCamera Retweeted

DIPRO Gurugram @diprogurugram1 · May 28

Hon'ble Prime Minister Sh. Narender Modi mentioned the iconic Museo Camera created in collaboration with Municipal corporation of Gurugram in his 101st Mann ki Baat
#MannKiBaat101 #MuseoCamera #Gurugram #Haryana #MuseumExpo

MuseoCamera and 8 others

3 · 11 · 1,782

Ganesh Shankar
Water Tech | Sustainability | Founder FluxGen | Founder SusMafia.org | Co-foun...
1w · Edited

Thank you, Honorable Prime Minister Narendra Modi, for mentioning about FluxGen Technologies's work in water management in yesterday's episode of Mann Ki Baat (मन की बात) - our responsibility towards building a water-positive future has only increased multi-folds!

Sir, this recognition belongs to some adamant souls who didn't give up despite all the hardship we had to go through during various challenging times when our business had little or no chance of survival - to name a few: Emanuel Deepak, Anand Vijayakumar, Vasantha Subbian, Bob Mathew Pulickan, SYAMLAL V S, Navya Ravella, Miligina, Atheerth N M, Jameer Kallinkeel (not in any specific order).

This episode has helped me to an extent understand the true essence of the verse from Geeta: "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" (Karmanye vadhikaraste Ma Phaleshu Kadachana), which translates to "Perform your duty but do not have any expectation of the fruits".

Sir, we had no clue that you would be talking about our work on the show yesterday, and honestly, it has never been something we have aspired to, even in our dreams. On the other hand, many of my colleagues have gone beyond the call of duty to get where we are today. I can connect to Bhagwat Geeta - when one is sincere and committed to their duties, divinity will do the rest.

#sustainability #waterconservation #climateaction

AICTE @AICTE_INDIA

Hon' Prime Minister Narendra Modi @narendramodi in today's #MannKiBaat, had a compassionate conversation with Mr. Gyamar Nyokum, a Yuva Sangam participant from Arunachal, expressing gratitude for the opportunity given and the unforgettable take-aways from his trip to Andhra Pradesh. Tune into the insightful conversation between Prime Minister Modi and Mr. Gyamar Nyokum from Arunachal. 🇮🇳 #YuvaSangam #EkBharatShreshthaBharat

1:12 PM · May 28, 2023 · 1,613 Views

Chowna Mein @ChownaMeinBJP

Thankful to HPM Shri @narendramodi ji for his interaction with our youth from Arunachal, Mr Gyamar Nyokum in the #Ekbharatshreshthabharat during his latest #Mannkibaat episode. His kind words of encouragement will surely motivate our youths to achieve more heights in life.

> **Kiren Rijiju** @KirenRijiju · May 29
> During #MannKiBaat, @narendramodi ji spoke to Shri Gyamar Nyokum from Arunachal Pradesh to know about his experiences in Rajasthan during Yuva Sangam program.
> He also found similarities between Arunachal Pradesh and Rajasthan.
> #EkBharatShreshthaBharat

11:57 AM · May 29, 2023 · 736 Views

Kumbhi Kagaz Retweeted

Rupankar Bhattacharjee @RupankarBhatta

Our Start-up @kumbhikagaz was Recognised by our Prime minister Sri @narendramodi ji in his show #MannKiBaat

#wetlands #waterhyacinth #conservation #savewater #wetlandconservation

2:38 PM · May 28, 2023 · 25 Views

LivNSense™ @LivnsenseT

Congratulations to Team LivNSense Technologies Pvt Ltd and Everyone who supported us in being recognized in the #MannkiBaat show by @narendramodi Ji Prime Minister of India telecasted at @DDNational for addressing Water Leakage Challenges
Read more - youtube.com/live/0qJNKZMyU...

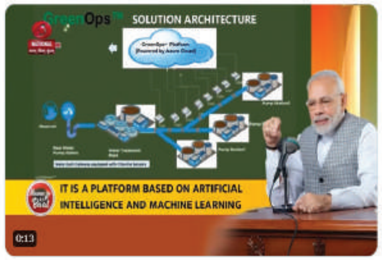

3:40 PM · Jun 2, 2023 · 15 Views

Himanta Biswa Sarma @himantabiswa

75 Amrit Sarovars are being constructed in every district of the country - Hon PM Shri @narendramodi Ji.

#MannKiBaat

11:27 AM · May 28, 2023 · 27.2K Views

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp

भारत की शक्ति इसकी विविधता में है। युवा संगम जैसे अभिनव प्रयासों से हमारी सांस्कृतिक एकता को और बल मिला है।

मुझे विश्वास है कि #MannKiBaat कार्यक्रम में #YuvaSangam पर आज की गई चर्चा और युवाओं के अनुभव सुनने के बाद देशवासियों में हमारे देश के विभिन्न हिस्सों को देखने-समझने का कौतूहल जगेगा।

Translate Tweet

4:30 PM · May 28, 2023 · 3,789 Views

मन की बात | प्रधानमंत्री ने किया युवा संगम का जिक्र, सावरकर और एनटीआर को पीएम ने श्रद्धांजलि भी अर्पित की

संग्रहालयों से सांस्कृतिक जुड़ाव मजबूत होगा:मोदी

विशाखा ने पीएम को तमिलनाडु यात्रा के बारे में बताया

संग्रहालय जाने से सांस्कृतिक जुड़ाव मजबूत होगा: मोदी

एजेंसी/नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से देशभर में फैले संग्रहालयों की यात्रा करने का आग्रह करते हुए कहा है कि इससे उनका सांस्कृतिक जुड़ाव मजबूत होगा। मोदी ने रविवार को आकाशवाणी पर अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात की 101वीं कड़ी में राष्ट्रवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि जब हम इतिहास की यादों को संजोकर रखते है तो वह आने वाली पीढ़ियों की बहुत मदद करता है। मोदी ने सामाजिक समरसता के लिए स्वतंत्रता संग्राम सेनानी वीर सावरकर और संत कबीर का स्मरण करते हुए कहा है कि उनके दिखाए गए मार्ग मौजूदा समय में भी प्रासंगिक है। वहीं प्रधानमंत्री ने दक्षिण भारत के प्रख्यात अभिनेता एवं फिल्म निर्माता एनटी रामा राव को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होंने राजनीति और फिल्म जगत में अपनी अद्भुत प्रतिभा के बल पर अमिट छाप छोड़ी। आज एन.टी.आर की 100वीं जयंती है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के बल पर वो न सिर्फ तेलुगु सिनेमा के महानायक बने, बल्कि उन्होंने, करोड़ों लोगों का दिल भी जीता। साथ ही पीएम मोदी ने देशवासियों से गर्मी और बारिश के मौसम में अपनी सेहत का ध्यान रखने का अनुरोध किया है। मोदी ने एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को ताकत देने में काशी-तमिल संगमम, सौराष्ट्र-तमिल संगमम, काशी-तेलुगु संगमम की तरह युवा संगम को भी अनूठा प्रयास बताया और कहा कि इस संगम में भाग लेने वाले युवाओं को अपने अनुभव ब्लॉग पर लिखकर देशवासियों के साथ साझा करने चाहिए। मोदी ने कहा है कि जल संबंधी भविष्य की सभी चुनौतियों से निपटने के लिए अमृत काल में देश के हर जिले में 75 अमृत सरोवरों का निर्माण किया जा रहा है। जल की कमी भविष्य का बड़ा संकट बन सकता है इसलिए जल संरक्षण के लिए इसके प्रबंधन को महत्व दिए जाने की जरूरत है।

मन की बात

युवा संगम देश की विविधता और आपसी संपर्क को बढ़ावा देने वाला कार्यक्रम : मोदी

अरुणाचल के ग्यामर व बिहार की विशाखा को पीएम मोदी ने दी सलाह

–मन की बात के 101वें एपिसोड में युवाओं को किया ब्लॉग लिखने के लिए प्रेरित

India's Strength Lies In Its Diversity: PM Modi During 101 Episode Of Mann Ki Baat

PM speaks about 'Jai Vigyan, Jai Anusandhan' in Mann Ki Baat

101ST EPISODE OF 'MANN KI BAAT'

'Savarkar's sacrifice, courage inspire all even today'

DIVYA A
NEW DELHI, MAY 28

REMEMBERING Vinayak Damodar Savarkar on his birth anniversary on Sunday, Prime Minister Narendra Modi hailed him as a "great freedom fighter", and said that stories related to his sacrifice, courage and resolve inspire all of us even today.

"I cannot forget the day when I went to the cell in Andaman where he underwent the sentence of 'kala pani'. Savarkar's personality comprised firmness and magnanimity. His fearless and self-respecting nature did not appreciate the mentality of slavery at all. Not only the freedom movement, whatever he did for social equality and social justice is remembered even today," the PM said during the 101st episode of 'Mann Ki Baat' on Sunday morning.

The opposition parties had criticised the government for inaugurating the new Parliament on Savarkar's birth anniversary. Earlier on Sunday, PM Modi, Lok Sabha Speaker Om Birla, several Union ministers and MPs paid floral tributes to Savarkar in the Central Hall of the old Parliament.

Modi also paid floral tributes to Savarkar in front of his portrait in the Central Hall after inaugurating the new Parliament building, where he was also joined by several Union ministers and MPs. Home Minister Amit Shah paid homage to Savarkar in a tweet, saying "he ignited the lamp of patriotism in the hearts of innumerable Indians with his thoughts."

The monthly radio show also had Modi recalling the contribution of several other personalities, whose anniversaries fall in the coming week. "The path shown by Kabir das is equally relevant even today," Modi said, ahead of the poet-reformer's anniversary on June 4. He recalled Kabir's couplet: "Kabira kuan ek hai, paani bhare anek... bartan mein hi bhed hai, paani sab mein ek" (there could be different kinds of people who come to the well to draw water, but the well does not differentiate...).

Lately, the Prime Minister has been making an extra effort to reach out to the southern states, be it through establishing Sengol in the new Parliament, or organising cross-state sangamams – such as the Kashi-Tamil Sangamam, Saurashtra-Tamil Sangamam and the Kashi-Telugu Sangamam.

During his radio address, the PM spoke about Telugu icon N T Rama Rao, whose 100th birth anniversary was marked on Sunday. "On the strength of his versatility of talent, he not only became the superstar of Telugu cinema, but also won the hearts of crores of people," Modi said, adding, "He essayed many historic characters with the brass of his acting. People liked NTR's acting in the roles of Bhagwan Krishna, Ram and many others."

The first half of the 30-minute show was devoted to the recent spree of Yuva Sangamam, being organised by the Education Ministry, to build bridges between youngsters of diverse states. The PM spoke to two participants – Gyamar Nyokum from Arunachal Pradesh and Vishakha Singh from Bihar – who had recently travelled to Rajasthan and Tamil Nadu, respectively, as part of the university exchange programmes.

While extolling them to write blogs on their experiences, he said that the first round of Yuva Sangamam had about 1,200 youths touring 22 states. He also spoke about his experience of visiting the Hiroshima Peace Memorial museum, and spoke at length about the range of museums in India, urging people to visit museums whenever they find time.

Prime Minister Narendra Modi paying tributes to V D Savarkar on the latter's birth anniversary on Sunday. PTI

Savarkar could not tolerate mindset of slavery, says Modi

Press Trust of India
NEW DELHI

Prime Minister Narendra Modi on Sunday hailed Hindutva ideologue V.D. Savarkar, saying his personality exuded strength and his fearless and self-respecting nature could not tolerate the mindset of slavery. Paying homage to Savarkar on his birth anniversary during the 101st *Mann ki Baat* broadcast, Mr. Modi said his sacrifice, courage and determination continued to inspire us.

Mr. Modi also paid homage to Kabir, whose birth anniversary is on June 4, saying the mystic-poet opposed every evil practice that divided people and tried to awaken society.

Paying tributes to Savarkar, Mr. Modi said, "Today is the birth anniversary of Veer Savarkar. The stories related to his sacrifice, courage and resolve inspire us all even today. I cannot forget the day when I went to the cell in Andaman where Savarkar served the sentence of '*Kala paani*'.

"Savarkar's personality exuded strength and magnanimity. His fearless and self-respecting nature could not tolerate the mindset of slavery. Not only in the freedom movement, whatever Savarkar did for social equality and social justice is remembered even today," Mr. Modi said.

Mr. Modi, Lok Sabha Speaker Om Birla, and Union Ministers paid floral tributes to Savarkar in the Central Hall of the old Parliament building.

Prime Minister Narendra Modi paying tribute to Savarkar on Sunday. PTI

नवभारत

अगले 25 वर्ष देश के लिए अहम : PM

जनभागीदारी सबसे बड़ी ताकत है

देश में हो रहा 75 अमृत सरोवरों का निर्माण

वडाप्रधानना 'मन की बात' कार्यक्रमनो १०१मो એપિસોડ

યુવા સંગમ દેશની વિવિધતાને પ્રોત્સાહન આપતો કાર્યક્રમ : મોદી

સરકારનું 'એક ભારત, શ્રેષ્ઠ ભારત' પર ફોકસ, લોકોની ભાગીદારી 'મન કી બાત'ની તાકાત

| નવી દિલ્હી |

વડાપ્રધાને વીર સાવરકરને તેમની જન્મજયંતી પર યાદ કર્યા

വീരസവർക്കറുടെ ത്യാഗവും ധീരതയും പ്രചോദനം: പ്രധാനമന്ത്രി

'મન કી બાત'

બીજી સદીની શરૂઆત : મોદી

એજન્સી | નવી દિલ્હી

પીએમ મોદીએ રવિવારે 'મન કી બાત'ના 101માં એપિસોડને સંબોધિત કર્યો હતો. પીએમ મોદીએ કહ્યું હતું કે 'મન કી બાત'નો આ એપિસોડ બીજી શતકની શરૂઆત છે. ગયા મહિને આપણે 100 એપિસોડ પૂર્ણ કરી બધાએ તેની વિશેષ ઉજવણી કરી હતી. પીએમએ કહ્યું હતું કે, જ્યારે મન કી બાત પ્રસારિત કરવામાં આવી હતી, ત્યારે વિશ્વના વિવિધ દેશો અને સમય ઝોનના લોકોએ તેને સાંભળ્યું હતું. મેં હજારો માઈલ દૂર ન્યૂઝીલેન્ડનો એક વીડિયો જોયો. જેમાં 100 વર્ષની માતા પોતાના આશીર્વાદ આપી રહી છે.

'सावरकरांचा त्याग व धाडस आजही प्रेरणादायी'

मन की बात

नाशिकच्या ढोले यांचे कौतुक

'मन की बात' में पीएम मोदी ने कहा- 25 साल बहुत ही महत्वपूर्ण

जनभागीदारी हमारी सरकार की सबसे बड़ी ताकत

जल संरक्षण आज की सबसे बड़ी जरूरत

नई तकनीक से जलकुंभी से बनाया जा रहा कागज

मुहिम — मन की बात की 101वीं कड़ी में प्रधानमंत्री मोदी ने देशवासियों से किया अनुरोध

गर्मी और बारिश के मौसम में अपनी सेहत का ध्यान रखें

नई दिल्ली, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से गर्मी और बारिश के मौसम में अपनी सेहत का ध्यान रखने का अनुरोध किया है।

अगले महीने तक देश के कुछ हिस्सों में गर्मी बढ़ रही होगी। कहीं-कहीं बारिश शुरू हो चुकी होगी। इसको देखते हुए सभी को अपनी सेहत का ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगली बार तक कुछ इलाकों में गर्मी और ज्यादा बढ़ चुकी होगी। कहीं-कहीं पर बारिश भी शुरू हो जाएगी। आपको मौसम की हर परिस्थिति में अपनी सेहत का ध्यान रखना है। उन्होंने कहा कि 21 जून को हम 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' भी मनाएंगे। इसकी भी देश-विदेश में तैयारियां चल रही हैं। उन्होंने कहा कि आप इन तैयारियों के बारे में भी अपने 'मन की बात' लिखते रहिए। किसी और विषय पर कोई और जानकारी अगर आपको मिले तो वो भी मुझे बताइएगा।

सामाजिक समरसता के लिए वीर सावरकर और संत कबीर को याद किया: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सामाजिक समरसता के लिए स्वतंत्रता संग्राम सेनानी वीर सावरकर और संत कबीर का स्मरण करते हुए कहा है कि उनके दिखाए गए मार्ग मौजूदा समय में भी प्रासंगिक है। आज 28 मई को, महान स्वतंत्रता सेनानी, वीर सावरकर जी की जयंती है। उनके त्याग, साहस और संकल्प-शक्ति से जुड़ी गाथाएँ आज भी हम सबको प्रेरित करती हैं।

पानी से जुड़ी चुनौतियों से निपटने बन रहे है अमृत सरोवर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि जल संकट भविष्य की सभी चुनौतियों से निपटने के लिए अमृत काल में देश के हर जिले में 75 अमृतसर सरोवरों का निर्माण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जल की कमी भविष्य का बड़ा संकट बन सकता है इसलिए जल संरक्षण के लिए इसके प्रबंधन को महत्व दिए जाने की जरूरत है और तकनीकी तरीके से जल संरक्षण किया जाना आवश्यक हो गया है। उन्होंने कहा कि हम सबने एक कहावत कई बार सुनी होगी, बार-बार सुनी होगी - बिन पानी सब सून। बिना पानी जीवन पर संकट तो रहता ही है, व्यक्ति और देश का विकास भी ठप पड़ जाता है।

संग्रहालय जाने से सांस्कृतिक जुड़ाव मजबूत होगा: मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से देशभर में फैले संग्रहालयों की यात्रा करने का आग्रह करते हुए कहा है कि इससे उनका सांस्कृतिक जुड़ाव मजबूत होगा। उन्होंने कहा कि जब हम इतिहास की यादों को संजोकर रखते हैं तो वह आने वाली पीढ़ियों की बहुत मदद करता है। उन्होंने कहा कि मेरा आपसे आग्रह है कि आपको जब भी मौका मिले, अपने देश के संग्रहालय देखने जरूर जाएँ और वहां की आकर्षक तस्वीरों को म्यूजियम मेमोरीज पर साझा करें। इससे अपनी वैभवशाली संस्कृति के साथ हम भारतीयों का जुड़ाव और मजबूत होगा।

युवा संगम के अनुभव ब्लॉग पर लिखकर साझा करें युवा : मोदी- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को ताकत देने में काशी-तमिल संगमम, सौराष्ट्र-तमिल संगमम, काशी-तेलुगु संगमम की तरह युवा संगम को भी अनूठा प्रयास बताया और कहा कि इस संगम में भाग लेने वाले युवाओं को अपने अनुभव ब्लॉग पर लिखकर देशवासियों के साथ साझा करने चाहिए।

শততম খণ্ডত দেশ-বিদেশৰ শ্ৰোতাৰ সঁহাৰি আছিল অভূতপূৰ্ব

১০১ সংখ্যাক 'মন কী বাত'ত আবেগিক প্ৰধানমন্ত্ৰী

'मन की बात' कार्यक्रम की 101वीं कड़ी में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा

'युवा संगम' देश की विविधता व आपसी संपर्क को बढ़ावा देने वाला कार्यक्रम

Savarkar's courage, sacrifice continue to inspire us: PM

Bipak.Dash@timesgroup.com

New Delhi: PM Modi on Sunday hailed Hindutva ideologue Vinayak Damodar Savarkar, popularly known as Veer Savarkar, saying his fearless and self-respecting nature did not tolerate the mentality of slavery. While paying homage to Savarkar on his 140th birth anniversary, the PM said his sacrifice, courage and determination "continue to inspire us".

Earlier in the morning Modi, Lok Sabha speaker Om Birla and a host of Central ministers paid floral tribute to Savarkar in the Central Hall of the current Parliament. The leaders paid their respect after inauguration of the new Parliament building project.

In his 101st Mann ki Baat, Modi said Savarkar was a great freedom fighter. "The stories related to his sacrifice, courage and resolve inspire us all even today. I cannot forget the day when I went to the cell in Andaman where Veer Savarkar underwent the sentence of Kalapani. Veer Savarkar's personality comprised firmness and magnanimity. His fearless and self-respecting nature did not appreciate the mentality of slavery at all. Not only the freedom movement, whatever Veer Savarkar did for social equality and social justice is remembered even today," he said. In his monthly radio address, the PM also spoke about the birth anniversary of Sant Kabirdas, which falls on June 4. "The path shown by Kabirdas-ji is equally relevant even today. Kabirdas-ji used to say there could be myriad kinds of people who come to the well to draw water... But the well does not differentiate anyone... water remains the same in all utensils," Modi said.

PM Modi pays tribute to Savarkar on his birth anniversary in New Delhi

He added Kabir opposed every evil practice that divided the society or tried to awaken the society. He said now that the country is moving forward with the determination to develop, there is a need to increase efforts to empower the society.

Remembering actor and TDP founder NT Rama Rao on his 100th birth anniversary, the PM said due the strength of the versatility of his talent, he not only became the superstar of Telugu cinema, but also won the hearts of crores of people.

ଜଳ ସଂରକ୍ଷଣ ଦିଗରେ ଅମୃତ ସରୋବରର ବଡ଼ ପଦକ୍ଷେପ

'मन की बात' कार्यक्रम की 101वीं कड़ी में मोदी ने कहा : 'युवा संगम' युवाओं को जोड़ने वाला शानदार कार्यक्रम

'युवा संगम' से युवाओं को मिला हौसला : मोदी

Mann Ki Baat: PM lauds start-ups working on water conservation

Our Bureau
New Delhi

Prime Minister Narendra Modi, in his address to the nation in the 101st episode of Mann Ki Baat on Sunday, stressed the importance of water management and praised three start-ups involved in the exercise.

Modi also paid tribute to Hindutva ideologue Veer Savarkar and former Andhra Pradesh Chief Minister and "superstar" of Telugu cinema NT Rama Rao on their birth anniversaries.

"Without water, life is always in crisis; the development of the individual and the country also comes to a standstill," he said.

The PM named three start-ups — Fluxgen, LivNSense, and Kumbhi Kagaz — that have come up with innovative technology for water conservation.

PM Narendra Modi

"Fluxgen provides water management options through IOT-enabled technologies. This technology will tell us about the patterns of water usage and will help in the effective use of water," the PM said.

The start-up LivNSense is a platform based on artificial intelligence and machine learning. "With its help, effective monitoring of water distribution can be done to ascertain where and how much water is being wasted," Modi pointed out. The third start-up Kumbhi Kagaz has embarked upon the special task of making paper from water hyacinth, the PM said. "Water hyacinth, which was once considered a problem for water sources, is now being used to make paper," the PM observed.

AMRIT SAROVARS

Looking at this future challenge, today 75 Amrit Sarovars are being constructed in every district of the country, Modi said.

"Our Amrit Sarovars are special because they are being built in the Azadi Ka Amrit Kal, and the essence of the effort of the people has been put into them. You will be pleased to know that, till now, more than 50 thousand Amrit Sarovars have been constructed. This is a giant step towards water conservation," he said.

101ST MANN KI BAAT

Modi Remembers Savarkar, Kabir and NT Rama Rao

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi on Sunday remembered Hindutva ideologue Vinayak Damodar Savarkar, mystic poet-saint Kabir and Telugu Desam Party's founder NT Rama Rao in his 101st 'Mann Ki Baat' programme on Sunday. Paying homage to Savarkar on his birth anniversary, the PM said his "sacrifice, courage and determination continue to inspire us". Remembering Kabir whose birth anniversary is on June 4, the PM said Kabir opposed every evil practice that divided the society and tried to awaken it. "Today, when the country is moving forward with a determination to develop, we should increase our efforts to empower the society, taking inspiration from sant Kabir," he said. "Today, is the 100th birth anniversary of NTR. He carved out his own identity in the cinema world as well as in politics. There too, he got lots of love... I offer my humble tribute to NT Rama Raoji, who ruled the hearts of millions of people." - OPB

ZEE हिन्दुस्तान

क्या है युवा संगम कार्यक्रम, जिसका 'मन की बात' में पीएम मोदी ने किया जिक्र

हिन्दुस्तान

संग्रहालयों से सांस्कृतिक जुड़ाव मजबूत होगा : प्रधानमंत्री

दैनिक जागरण

'मन की बात' में PM मोदी ने किया गुरुग्राम के म्यूजियो कैमरा म्यूजियम का जिक्र, जानिए क्या है इसकी खासियत

प्रभात खबर

मन की बात : PM मोदी ने झारखंड के खूंटी जिले में जल संरक्षण की तारीफ की, कहा- प्रेरक है प्रयास

THE TIMES OF INDIA

Yuva Sangam great initiative to promote people-to-people connect: PM Modi

Hindustan Times

'Unprecedented, makes one emotional': PM Modi lauds response to Mann Ki Baat

Outlook

Savarkar's Fearless, Self-Respecting Nature Couldn't Tolerate Mindset Of Slavery: PM Modi

Odishatv.in

PM Modi invokes Sant Kabir's message in 'Mann Ki Baat'

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

ALL INDIA RADIO NEWS